thearyasamaj.org

ओ३म्

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु
- हमारे वीर विजयी हों

वर्ष : 29 अंक : 9, 25 नवम्बर-25 दिसम्बर, 2014 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि संवत् 1,96,08,53,111

आर्य वीर विजय

अमर शहीद पं. लेखराम स्मृति मासिक पत्रिका

सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरियाणा ● 10 वर्षीय शुल्क 700 रु. ● वार्षिक शुल्क 70 रु. ● यह अंक 10 रु.

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

ओ३म्

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु

हरियाणा-दिल्ली-पंजाब-उत्तर प्रदेश-उत्तरांचल-राजस्थान-मध्यप्रदेश-गुजरात-महाराष्ट्र-हिमाचल प्रदेश

विज्ञापन की दरें (वार्षिक)

अन्तिम पृष्ठ	7000/-	अन्दर के रंगीन पृष्ठ	4000/-
अन्तिम पृष्ठ रंगीन आधा	4000/-	अन्दर का आधा (सादा)	2500/-
अन्तिम अन्दर का रंगीन	6000/-	एक विज्ञापन पट्टी 250/- प्रति पृष्ठ, प्रति अंक	

thearyasamaj.org

ऋग्वेद || ओ३म् || यजुर्वेद

देव दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद

के.एल. महता दयानन्द पब्लिक स्कूल्ज़
के.एल. महता दयानंद महिला महाविद्यालय

देव दयानंद के सच्चे शिष्य बन
शिक्षा का अलख जगाया।
पूर्णाहुति में निज-उत्सर्ग कर
सेवा का धर्म निभाया।
ऋषि के सच्चे पथ पर चलकर
'महात्मा' वह कहलाया।।

महात्मा कन्हैयालाल महता

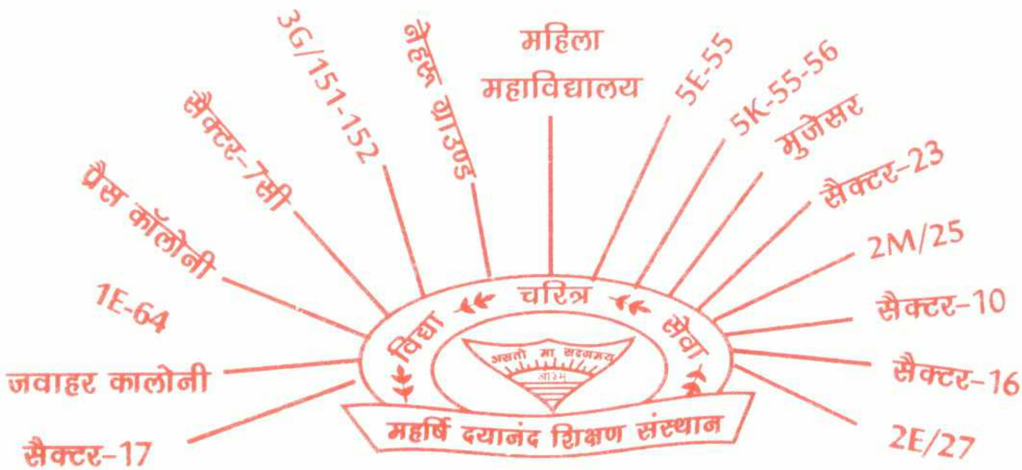

अथर्ववेद सामवेद

thearyasamaj.org

फूलों का गुलदस्ता

संकलनकर्ता– मनोहर लाल आनन्द, प्रधान सम्पादक

1. वह ही धर्मात्मा जन हैं जो अपने आत्मा के सदृश सम्पूर्ण प्राणियों को मानें। किसी से भी द्वेष न करें और मित्र के सदृश सबका सत्यकार करें। **(स्वामी दयानन्द)**
2. बुद्धिमान मनुष्य मूर्ख, मित्र, गुरु औरी प्रियजनों के साथ व्यर्थ का विवाद न करें। **(चाणक्य)**
3. संसार यात्रा लम्बी है, इसका अन्त मुक्ति है। बुढ़ापे तक भी कुछ न कर पाये तो मानसिक चिन्तन से अपने कुविचारों को बदल डालो जिससे दूसरे जन्म में सुख मिले।
4. बड़ों का दिल कभी न दुखाओ।
5. मनुष्य की मीठी वाणी उसकी प्रिय मित्र है। यह स्वयं को तथा दूसरों को शीतलता देती है।
6. बिना श्रद्धा, विश्वास, प्रेम के न तो आचरण हो सकता, न प्रगति। **(स्वामी सत्यपति)**
7. चित्त की शान्ति के लिये बन्धी हुई रोजी जरूरी है। **(सादी)**
8. जो कुछ मैंने दिया था वह अब भी मेरे पास है, जो कुछ व्यय किया वह विद्यमान था, जो संचित किया था वह मैंने खो दिया। **(स्मृति लेख)**
9. मैं प्रेसीडेंट होने के अपेक्षा सत्य पर कायम रहना अधिक पसन्द करूँगा। **(हैनरी क्ले)**
10. मैंने अपनी इच्छाओं का दमन करके सुख प्राप्त करना सीखा है, उनकी पूर्ति द्वारा नहीं। **(जान स्टुअर्ट)**

आर्य वीर विजय

सम्पादक मण्डल

मनोहर लाल आनन्द
प्रधान सम्पादक

सतीश कौशिक
व्यवस्थापक
☎ : 12083458

[illegible]द सिंह शर्मा
संचालक
☎ : 9868956786

देश बंधु आर्य
संरक्षक
☎ : 9811140360

डॉ. (श्रीमती) विमल महता
संरक्षिका
☎ : 9350266601

अजीत कुमार आर्य
संरक्षक
☎ : 09794113456

श्री शिव दत्त आर्य
संरक्षक
☎ : 9810638622

संजीव कुमार मंगला
कानूनी परामर्शदाता
☎ : 9812271456

समस्त अवैतनिक

'ब्रह्मचर्य का महत्व'

(कविराज शामलादास जी उदयपुर से वार्तालाप, अगस्त 1882)

कवि शामदास जी ने कहा–

एक दिन मैंने निवेदन किया कि आपका स्मारक चिह्न बनाना चाहिये। स्वामी जी ने कहा नहीं प्रत्युत मेरी भस्मी को किसी खेत में डाल देना, काम आयेगी खाद बन कर, कोई स्मारक न बनाना। ऐसा न हो कि मूर्ति पूजा आरम्भ हो जाये। मेरा विचार था कि आपकी प्रस्तर मूर्ति बनवाऊँ। कहा कि कविराज जी ऐसा न करना, मूर्ति पूजा का मूल यही है। उनकी बातें श्रेष्ठ थी। ब्रह्मचारी तो प्रथम श्रेणी के थे। जहाँ तक उनसे हो सकता था स्त्रियों को देखते ही नहीं थे। उनका कहना था वीर्य का नाश आयु का नाश है। वह वीर्य बड़ा रत्न है। यदि मार्ग में जाते हुए कोई भीस्त्री आ जाती तो मातृ शक्ति कह कर नेत्र बन्द कर लेते। उनकी यह बाते ढोंग नहीं परन्तु सच्ची और हार्दिक थी क्योंकि वे एक महान जितेन्द्रिय योगी थे।

बैंक सम्बन्धी कार्यवाहियों के लिए जानकारी – (बैंक का नाम – AXIS BANK)

आर्य वीर विजय का बैंक एकाउण्ट नं. 039010100010766

IFSC Code : UTIB0000039

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

बच्चों की सुध कौन ले?

कहने को तो कहते हैं कि बच्चे देश की धरोहर हैं और वास्तव में यह है भी सच्च कि बच्चे ही देश की धरोहर हैं और आगे चलकर देश के कर्णधार बन सकते हैं। चिन्तनशील व्यक्तियों द्वारा देखा जा रहा है कि उनके चरित्र निर्माण की ओर बहुत ही थोड़ा ध्यान दिया जा रहा है। वैदिक संस्कृति में बचपन से मरण प्रर्यन्त तक के लिये 16 संस्कार निर्धारित किये हैं जिनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

देव दयानन्द इन संस्कारों के महत्व को गहराई से समझते थे कि संस्कारों द्वारा ही निर्माण किया जा सकता है, इसलिये उन्होंने संस्कार विधि एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में संस्कारों के बारे में विस्तृत लिखा है। वैदिक संस्कृति डंके की चोट से मानती है कि जैसा व्यक्ति चाहे वैसा बच्चा पैदा किया जा सकता है और जैसा चाहो वैसा ही उसको बनाया जा सकता है। आज का वातावरण ही ऐसा दूषित बना दिया गया है और इस स्थिति में योग्य सन्तान पैदा करना और उसे उत्तम संस्कारों से युक्त करना ही बड़ा कठिन हो गया है। कहते हैं जहाँ चाह होती है वहाँ राह निकल आती है पर अब तो ऐसा लगता है या तो उनके मन में ऐसी चाह ही नहीं है या जो ऐसा करने में बाधा है वह त्याग तपस्या की है, जिसमें वह अपने को समर्थ नहीं पाते। सच्चाई यह है बहुतों को तो 16 संस्कारों का पता ही नहीं और न ही उनमें चाह है, कि वह जानें। उनको तो केवल धन कमाने की चिन्ता है और वह इसके लिये प्रातः से शाम तक लगे रहते हैं।

आर्यवीर दल ग्रीष्म अवकाश में चरित्र निर्माण शिविर लगाते हैं। 8-10 दिन संयोजक और शिक्षक खूब मेहनत करते हैं, प्रातः 4-5 बजे से लेकर रात 10 बजे तक खूब मेहनत करते है और बच्चों को सब कुछ सिखाते हैं। धन इकट्ठा करने के लिये भी दिन रात भाग दौड़ करते है तब जा कर शिविर अच्छी तरह से सम्पन्न होता है। फिर साल भर उन वीरों से कोई विशेष सम्पर्क नहीं रखा जाता जिस कारण विशेष लाभ भी नहीं होता।

वेद में कहा है-मातृमान, पितृमान, आचार्यवान पुरुषों- तीन गुरु हैं जो निर्माण करते हैं। पहला गुरु माता है। कहा है माता निर्माता भवति। माता निर्माण करती है। आज हालत यह है कि जो मातायें शिक्षित हैं वह ज्यादातर नौकरी करती हैं और उनके पास समय ही नहीं है जो बच्चों के निर्माण के लिये लगायें। संयुक्त परिवारों की परम्परा टूटती जा रही है, जहां दादा-दादी ध्यान रख सकें। जो मातायें पढ़ी लिखी नहीं हैं उनको इस बारे में कोई ज्ञान नहीं है। आज की जीवन शैली ऐसी बन गई है कि हर व्यक्ति अति व्यस्त है। भागदौड़ भरी जिन्दगी बन गई है। दूसरा गुरु पिता है-पिता की भी वही हालत है जो माताओं की है, जैसा कि पहले लिख चुके हैं। तीसरा गुरु आचार्य होता है। आचार्य उसको कहते हैं जो आचारवान हो। पर आज आचारवान अध्यापक ढूंढने से मुशिकल से ही मिलते हैं। जब फैक्टरी में माल निर्माण करने वाले ही अयोग्य हों तो बढ़िया माल कैसे तैयार करेंगे। घटिया माल ही तैयार होगा।

– सम्पादक

Auth. Distributor
Sleepwell
Sleepwell

परदे ही परदे गददे ही गददे

Singhal Furnishing

J.K. Singhal
S.K. Singhal

(Auth. Sleepwell Gallery)

Deals in : All kinds of S/W Mattress, Cushions, Pillows, Flooring Carpets, Curtains, Sofa's Clothes, Sofa Materials & Blinds.

Near Aggarwal Dharmshala, Nathu Colony, Chawla Colony, Ballabgarh-121004

Ph. : (O) 0129-2244905, J.K. : 9911706903, S.K. 9891305902

thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द महापुरुष थे

- वैद्य धर्मदत्त विद्यालंकार

लाला मुंशीराम जालन्धर के अत्यन्त प्रतिष्ठित वकील थे। उनकी वकालत बहुत ऊँचे दर्जे की थी। वकील के रूप में उन्होंने प्रचुर धनराशि एवं यश अर्जित किया। पर अकस्मात् उनको एक स्वप्न आया और उसे कार्यरूप में परिणत करने के लिए उन्होंने अपनी सुख-समृद्धि को लात मारी और हरिद्वार से पाँच मील दूर घने जंगल में काँगड़ी ग्राम में गुरुकुल की स्थापना की। मुझे सन् 1903 से 1917 तक 14 वर्ष उनके चरणों में रहकर विद्याभ्यास करने का सौभाग्य मिला। उन्हें मैंने रात-दिन जागरूक, घोर तपस्वी एवं लगनशील देखा। उन्होंने गुरुकुल को अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया, यहाँ तक कि अपने वस्त्र, भोजन आदि के लिए भी गुरुकुल से एक भी पैसा नहीं लिया। इस प्रकार अपने त्याग, परिश्रम एवं अध्यवसाय से गुरुकुल को उच्च शिखर पर पहुँचा दिया और सन् 1917 में स्वयं संन्यास ले लिया।

मैंने उनकी महानता के अनेक चित्र देखे। सन् 1915 में महात्मा गाँधी जी को उनके चरणों में झुकते देखा। सन् 1914-15 के लगभग वायसराय को सिर झुकाते देखा, जब वायसराय द्वारा गुरुकुल से प्रभावित होकर कुछ अनुदान देने का प्रस्ताव किया गया। बाद में स्वामीजी वायसराय के निमन्त्रण पर उनसे मिलने शिमाला भी गये। यू.पी. के तत्कालीन गवर्नन लार्ड मेस्टन तीन-चार बार स्वयं महात्मा जी से मिलने गुरुकुल आये। श्री रेम्जे मैकडोनाल्ड-जो बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री बने-तो एक बार एक दिन के लिए ही गुरुकुल आये थे, पर वे स्वामीजी और गुरुकुल से इतना प्रभावित हुए कि एक के बजाय तीन दिन उनके साथ रहे। यही नहीं, बल्कि वापस जाकर उन्होंने लिखा कि 'कोई कलाकार भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिए सजीव मॉडल चाहे तो मैं इस भव्यमूर्ति (महात्मा मुंशीराम जी) की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सैण्ट पीटर के चित्र के लिए नमूना माँगेगा तो इस जीवित भव्यमूर्ति के दर्शन की प्रेरणा दूँगा।' श्री सी.एफ. एण्ड्रूज तो कई बार गुरुकुल आकर रहते और स्वामीजी से प्रेरणा ग्रहण करते थे। वे उनके घनिष्ठ मित्र बन गये थे। महात्मा गाँधी को स्वामीजी का प्रथम परिचय सी.एफ. एण्ड्रूयूज ने ही दिया था और दक्षिणी अफ्रीका से भारत वापस आने पर स्वामीजी से मिलने की प्रेरणा दी थी।

इस प्रकार मैंने तो कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द को महापुरुष के रूप में ही पूजा। वे न केवल महापुरुष थे, वरन् महात्मा भी थे। महात्मा गाँधी के शब्दों में, 'अगर कोई मुझे 'महात्मा' के नाम से पुकारता भी था तो मैं यही सोच लेता था कि महात्मा मुंशीराम जी के बदले भूल से मुझे किसी ने पुकार लिया होगा।.... मैं जानता था कि हिन्दुस्तान की जनता ने उन्हें उनकी देश सेवा के लिए महात्मा की उपाधि दी।'

ऐसे महापुरुष एवं महात्मा को मैं हृदय से प्रणाम करता हूँ और अत्यन्त आदर भाव से उनका स्मरण करता हूँ। ▪

सत्यार्थ क्यों पढ़ें

1. अन्धश्रद्धा निर्मूलन के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।
2. तीन हजार ग्रन्थों का सार सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।
3. वैचारिक क्रांति के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।
4. सन्तानों की सुशिक्षा के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।
5. क्रान्तिकारियों की गीता रही सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।
6. वेदों में क्या लिखा है यह जानने के लिये ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पढ़ें।
7. सच्चे ईश्वर को जानने के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।
8. धर्म अधर्म जानने के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।
9. वैदिक धर्म, शिक्षा, सिद्धान्तों की जानकारी के लिये ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पढ़ें।
10. सोलह संस्कारों की विस्तृत जानकारी के लिये संस्कार विधि पढ़ें।

thearyasamaj.org

महात्मा हंस राज

- डा. भवानी लाल भारतीय

गृहस्थ होकर तथा सांसारिक जीवन व्यतीत करते हुए भी कोई व्यक्ति किस प्रकार देश, समाज तथा व्यापक जनहित के लिए स्वयं को समर्पित कर सकता है यदि यह जानना हो तो हमें सर्वस्व-त्यागी महात्मा हंसराज के जीवन को पढ़ना चाहिए।

हंसराज का जनम 19 अप्रैल 1864 को पंजाब के होशियारपुर जिले के बजवाड़ा नामक ग्राम में एक सद्‌गृहस्थ लाला चूनीलाल के यहाँ हुआ। बारह वर्ष की आयु में उनके पिता का देहान्त हो गया। गृहस्थी का दायित्व उनके बड़े भाई लाला मुल्काराज पर आ पड़ा। उन्होंने अपनी शिक्षा अधूरी ही छोड़ दी और डाक-विभाग में मुलाजिम बन गए। छोटे भाई हंसराज ने अपनी पढ़ाई जारी रक्खी। कॉलेज की उच्च शिक्षा के लिए वे लाहौर आ गए।

1877 का ही वर्ष था, जब आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने पंजाब प्रान्त का व्यापक भ्रमण किया और अपने व्याख्यानों से इस प्रदेश को आन्दोलित कर दिया। स्वामी दयानन्द के विचारों से हंसराज भी परिचित हो गए।

मिशन स्कूल में पढ़ते हुए, उसके ईसाई मुख्याध्यापक से वे उस समय टकरा गए जब उस व्यक्ति ने वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता पर निराधार आक्षेप कर डाले। नवीं श्रेणी का विद्यार्थी अपने अध्यापक की बात का प्रतिवाद करने के लिए उठ खड़ा हो और अत्यन्त विश्वास के साथ आर्यों के एकेश्वरवादी होने की घोषणा करे यह आश्चर्य ही तो था! किन्तु मुख्याध्यापक ने इसे भी लड़के की गुस्ताखी समझा। उसने इस आर्य विद्यार्थी को पाठशाला से निकाल दिया। शीघ्र ही उसने अनुभव किया कि इसमें हंसराज की तो कोई गलती नहीं थी। अतः हंसराज को पुनः उसी स्कूल में प्रवेश मिल गया।

1885 में हंसराज ने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। संस्कृत और इतिहास में उन्हें विशेष योग्यता प्राप्त हुई। हंसराज ने सहपाठियों में कई ऐसे थे, जिन्होंने आगे चलकर पंजाब तथा भारत के इतिहास में अपना नाम अमर किया। उनमें लाला लाजपतराय, पं. गुरुदत्त, प्रो. रुचिराम साहनी, राजा नरेन्द्रनाथ आदि उल्लेखनीय हैं। ये सब हंसराज के सहपाठी थे। लाला हंसराज 'आर्यसमाज लाहौर' के सभासद् बन गए। इस

समाज द्वारा संचालित अंग्रेज़ी पत्र 'रीजेनेरेटर ऑफ आर्यावर्त' के अवैतनिक सहायक सम्पादक भी रहे। पं. गुरुदत्त ने पत्र के प्रमुख सम्पादक का दायित्व ग्रहण किया था। लाला हंसराज उन दिनों स्वामी दयानन्द की वेद-विषयक मान्यताओं से परिचित होने के लिए, उनके द्वारा रचित प्रमुख ग्रन्थों का अध्ययन कर रहे थे।

30 अक्तूबर, 1883 को अजमेर में ऋषि का निधन हो गया। यह शोक-संवाद जब लाहौर पहुँचा तो दिवंगत ऋषि को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए 8 नवम्बर 1883 को लाहौर में एक सभा आयोजित की गई। सभा के अन्त में स्वामी दयानन्द की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना का निश्चय हुआ जिसमें हिन्दी और संस्कृत के उच्चतर अध्ययन के साथ-साथ, वेदादि सत्य शास्त्रों के अध्ययन तथा पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान एवं अंग्रेज़ी भाषा के भी शिक्षण की व्यवस्था हो। इस कॉलेज को 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज'-डी.ए.वी. कॉलेज का नाम दिया गया। प्रारम्भ में तो कॉलेज के स्थान पर एक स्कूल खोलने का ही विचार था।

लाला हंसराज बी.ए. तो कर ही चुके थे। यदि वे चाहते तो उस समय पंजाब सरकार में कोई ऊँचा पद प्राप्त कर लेना उनके लिए कठिन नहीं था। किन्तु ऋषि दयानन्द के चरण-चिह्नों पर चलने की प्रबल लालसा ने, उन्हें स्वजीवन को डी.ए.वी. के लिए समर्पित करने को विवश कर दिया। अब उन्होंने बिना कोई वेतन लिये डी.ए.वी. स्कूल का मुख्याध्यापक बनने की इच्छा जाहिर की। प्रबंध-समिति ने उनके इस जीवनदान के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

1 जून 1886 को जो डी.ए.वी. स्कूल एक छोटे-से

thearyasamaj.org

पौधे के रूप में स्थापित किया गया, कालान्तर में उसने महात्मा हंसराज जैसे सर्वस्व–त्यागी, जीवन–बलिदानी महापुरुष के नेतृत्व एवं संरक्षण में पंजाब के ही नहीं, किन्तु समस्त देश के एक गौरवशाली, राष्ट्रीय शिक्षण–संस्थान का रूप ले लिया, जिसकी सफलता एवं गौरवशाली परम्परा भारतीय शिक्षा के इतिहास में ज्योतिस्तम्भ सिद्ध हुई। हंसराज ने 1911 तक डी.ए.वी. कॉलेज के प्रिंसिपल का कार्य किया। इस बीच इस महाविद्यालय की सर्वतोमुखी उन्नति हुई। छात्रों की संख्या और परीक्षा–परिणाम की दृष्टि से यह उत्तर भारत की एक श्रेष्ठतम संस्था थी। इसके अन्तर्गत मानविकी और विज्ञान के अतिरिक्त अभियांत्रिकी, आयुर्वेद, दस्तकारी आदि विभाग भी कार्यरत थे। उच्चकोटि के संस्कृत–शिक्षण तथा उच्चतर शोध के लिए दयानन्द कॉलेज में संस्कृत–शोध–विभाग तथा हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह स्थापित किये गए। लगभग पच्चीस वर्षों तक निरन्तर कॉलेज की सेवा करने के पश्चात् अड़तालीस वर्ष की आयु, में कॉलेज के प्राचार्य के पद से हंसराज मुक्त हो गए। अब उनका कार्य–क्षेत्र और अधिक विस्तृत तथा व्यापक हो गया था।

19वीं शताब्दी का अन्तिम दशक आर्यसमाज के इतिहास में सामान्यतः और पंजाब के आर्यसमाज में विशेष रूप से उथल–पुथल का रहा। डी.ए.वी. कॉलेज में वेद तथा संस्कृत के शिक्षण का क्या स्तर हो, मांस–भक्षण उचित है या अनुचित आदि विवादास्पद विषयों पर आर्यसमाज में ऊहापोह होता रहा। लाला हंसराज भी इस विवाद में एक पक्षविशेष का नेतृत्व तो करते थे, किन्तु वे यह भी अनुभव करते थे कि विरोध और वैमनस्य की इस आँधी को एक दिन शान्त होना ही है। अतः उन्होंने आर्यसमाज के आन्तरिक वाद–विवादों में, अपनी नाममात्र भूमिका निभाते हुए भी, अपने गरिमामय व्यक्तित्व पर कोई आँच नहीं आने दी। उसी का परिणाम था कि वे न केवल आर्यसमाज के क्षेत्र में, अपितु देश–विदेश में सर्वत्र सम्मानित हुए।

हंसराज गृहस्थ होते हुए भी अपने तप, त्याग, सहिष्णुता और सांसारिक तटस्थता के कारण किसी संन्यासी से कम नहीं थे। जब उनके पुत्र बलराज को राजनैतिक षड़यंत्र का अपराधी बनाकर उन पर मुकद्दमा चलाया गया, तब महात्माजी के पुत्र–प्रेम की एक प्रकार से परीक्षा थी। वे अटल ईश्वर–विश्वासी तथा कर्म–सिद्धान्त के प्रति आस्थावान् थे। उन्होंने अपने पुत्र को स्पष्ट कह दिया कि 'यदि तुम स्वयं को अपराधी समझते हो, तब तो सजा काटकर उसका प्रायश्चित करो, और यदि तुम्हारा कोई अपराध नहीं है तो सरकार को तुम्हें मुक्त कर देना चाहिए।' महात्मा जी ने सुख–दुःख, हानि–लाभ, निंदा–स्तुति आदि द्वन्द्वों से ऊपर उठकर, स्थितप्रज्ञता की स्थिति प्राप्त कर ली थी।

आर्यसमाज के सामाजिक सेवाकार्यों को महात्मा हंसराज ने सदा वरीयता दी। वे समय–समय पर पंजाब तथा देश के अन्य भागों में धर्म–प्रचारार्थ जाते, उपदेश तथा व्याख्यान देते, एवं अपनी सत्सम्मति से आर्यों का मार्गदर्शन करते।

1927 में जब दिल्ली में 'प्रथम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन' आयोजित किया गया, तब महात्माजी को उसका अध्यक्ष बनाया गया। इस अवसर पर उन्होंने जो अध्यक्षीय भाषण दिया, उसमें आर्यसमाज के सम्मुख उपस्थित प्रश्नों और समस्याओं की व्यापक समीक्षा की गई। अछूतोद्धार, शुद्धि और संगठन जैसे हिन्दु जाति के हित के प्रश्नों पर उनकी विचारधारा अत्यन्त स्पष्ट तथा व्यावहारिक थी। उन्होंने उत्तर भारत में स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में चलाए गए शुद्धि के आन्दोलन में पूर्ण सहयोग दिया तथा शुद्धि के कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया।

वस्तुतः महात्माजी श्वेत वस्त्रों में ही संन्यासी थे। जब 1933 में, अजमेर में आयोजित ऋषि दयानन्द के निर्वाण की अर्द्ध–शताब्दी के अवसर पर कुछ संन्यासियों ने स्वामी सर्वदानन्द जी से निवेदन किया कि वे उनके साथ चलकर महात्माजी को चतुर्थाश्रम की दीक्षा लेने के लिए प्रेरित करें, तब वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि 'निर्द्वन्द्व तथा सभी प्रकार की सांसारिक ऐषणाओं से मुक्त महात्माजी किसी भी कमण्डलधारी संन्यासी से कम नहीं हैं और मात्र कपड़े रँगकर संन्यास का बाना पहनने की उन्हें कोई आवश्यकता ही नहीं है।' ऐसे पुण्यश्लोक महात्मा हंसराज चौहत्तर वर्ष की आयु भोगकर 15 नवम्बर, 1938 को परमात्मा की गोद मे चले गए।

■

thearyasamaj.org

लाला लाजपतराय

- भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज के जिन महापुरुषों ने स्वदेश-हित के लिए सर्वोत्कृष्ट बलिदान किये, उनमें लाला लाजपतराय का नाम चिरस्मरणीय है। ये वही बलिदानी थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था कि राष्ट्र-भक्ति का पाठ उन्होंने स्वामी दयानन्द से सीखा है, और आर्यसमाज-रूपी माता की गोद में बैठकर ही वे स्वदेश-हित के लिए कुछ कर पाए हैं।

जन्म से वैश्य, किन्तु गुण, कर्म एवं स्वभाव से क्षत्रिय, लाजपतराय का जन्म पंजाब प्रान्त के जिला फरीदकोट के एक गाँव ढुँढिके में 28 नवम्बर 1865 को हुआ। उनके पिता लाला राधाकृष्ण उर्दू-फारसी के अच्छे जानकार तथा पेशे से अध्यापक थे। उन्होंने इस्लाम की शिक्षाओं का गहराई से अध्ययन कियाथा। दीने-मुहम्मदी में उनकी गहरी आस्था थी। अग्रवाल बनिया होने पर भी वे नियमित रूप से नमाज पढ़ते थे, रमजान के महीने में रोजे भी रखते थे।

1880 में एण्ट्रेस की परीक्षा पास कर लाजपतराय लाहौर आए। गवर्नमेंट कॉलेज से एफ.ए. तथा कानून की मुख्तारी-परीक्षाएँ साथ-साथ उत्तीर्ण कीं। 1882 के वर्ष में लाहौर में ही वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आए। लाला साईंदास की प्रेरणा से वे समाज के सदस्य बने। पं. गुरुदत्त तथा लाला हंसराज जैसे युवक जहाँ कॉलेज में लाला लाजपतराय के सहपाठी थे, वहाँ ये लोग आर्यसमाज में भी उनके सहयोगी कार्यकर्ता थे। जब 30 अक्तूबर 1883 को आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द का अजमेर में निधन हुआ, तब आर्यसमाज लाहौर की ओर से 8 नवम्बर को एक शोकसभा का आयोजन किया गया। इसमें यह निश्चय हुआ कि दिवंगत महर्षि की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज' के नाम से एक ऐसी शिक्षण-संस्था की स्थापना की जाए, जिसमें संस्कृत एवं हिन्दी के उच्च स्तरीय शिक्षण, वेदादि शास्त्रों की गम्भीर शिक्षा के साथ-साथ पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान तथा अंग्रेज़ी भाषा के अध्ययन की व्यवस्था हो।

डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर की स्थापना तथा संचालन में लाला लाजपतराय का भी मूल्यवान् सहयोग रहा। वे विभिन्न प्रतिनिधि-मण्डलों के सदस्य बनकर कॉलेज की स्थापना के लिए धन-संग्रह के लिए देश के विभिन्न नगरों में जाते रहे। जब यह महाविद्यालय सुचारू रूप से चल पड़ा, तब इसकी शिक्षा-नीति को प्रभावी एवं गतिशील बनाने में लाला जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कालान्तर में डी.ए.वी. कॉलेज में संस्कृत तथा वेदादि शास्त्रों के पाठ्यक्रम के स्वरूप और उसकी रूपरेखा को लेकर आर्यनेताओं में अनेक प्रकार के मतभेद उभर आए, किन्तु लालाजी ने इस विवादास्पद विषय पर पर्याप्त संतुलित दृष्टिकोण अपनाया।

1920 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग और सत्याग्रह के आन्दोलन चलाए गए और सरकारी स्कूलों और कॉलेजों के बहिष्कार की बात आई। तब लाला लाजपतराय ने भी डी.ए.वी. कॉलेज के संचालकों को देश की आजादी के महत्तर उद्देश्य को समक्ष रखकर कुछ काल के लिए कॉलेज को बंद कर देने का सुझाव दिया। यह दूसरी बात है कि महात्मा हंसराज ने अपनी दूरदर्शिता से ऐसा कदम उठाने से इन्कार कर दिया। उनकी दृढ़ धारणा थी कि किसी तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अधिक महत्वपूर्ण तथा स्थायी हित के कार्य की बलि नहीं दी जानी चाहिए।

लाला लाजपतराय ने 1885 में वकालत की परीक्षा पास की। कुछ काल तक रोहतक तथा हिसार में वकील के रूप में कार्य करने के पश्चात् वे लाहौर आ गए। शीघ्र ही उन्हें अपने कार्य में आशा से अधिक सफलता मिली। कानून के पेशे में भी उनकी प्रतिष्ठापूर्ण स्थिति थी।

1888 में वे कांग्रेस-आंदोलन से जुड़े। प्रथम बार वे इलाहाबाद-अधिवेशन में सम्मिलित हुए। 1906 में वे पं. गोपालकृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस के शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गए। वहाँ से वे अमेरिका चले

thearyasamaj.org

गए और देश की स्वतंत्रता के लिए पश्चिमी देशों में अनुकूल वातावरण बनाया।

लाला लाजपतराय ही प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने राष्ट्रीय महासभा में पूर्ण आजादी प्राप्त करने के विचारों का प्रसार किया और ब्रिटिश ताज के अन्तर्गत रहकर देश को सीमित स्वतंत्रता प्राप्त करने के कांग्रेस के आदर्श का विरोध किया। उन्होंने लोकमान्य तिलक तथा बंगाली नेता विपिन चन्द्र पाल के सहयोग से कांग्रेस में उग्रवादी गरम विचारधारा का प्रवेश कराया। उन्होंने 1905 की बनारस-कांग्रेस में ब्रिटिश युवराज के भारत-आगमन के समय, उनका स्वागत करने का डटकर विरोध किया। सूरत-कांग्रेस में लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतराय ने कांग्रेस की नरम नीतियों का प्रबल विरोध किया था। इसका परिणामकांग्रेस में पड़ी फूट के रूप में प्रत्यक्ष हुआ और पं. मदनमोहन मालवीय, रासबिहारी घोष तथा फीरोजशाह मेहता आदि नरम विचार के नेताओं ने महसूस कर लिया कि अब भारत की भावी राजनीति का स्वरूप देना लाला लाजपतराय और उनके साथियों के अधिकार में आ गया है।

पंजाब में किसान-जागृति और उससे उत्पन्न क्रान्तिकारी राजनैतिक चेतना के सूत्रधार लालाजी ही थे। उनके और सरदार अजीतसिंह के जोशीले व्याख्यानों से भयभीत होकर, तत्कालीन शासन ने उन्हें देश से निर्वासित कर बर्मा के माण्डले नगर में नजरबंद कर दिया। किन्तु शासकों के इस अत्याचारपूर्ण कृत्य के प्रतिरोध में उठे प्रबल जनमत की अवहेलना करना सरकार के लिए संभव नहीं था। लालाजी तथा सरदार अजीतसिंह को शीघ्र ही रिहा करना पड़ा। स्वदेश लोटने पर एक लोकप्रिय जन-नायक के रूप में उनका स्वागत हुआ और जनता ने उन्हें सिर-आँखों पर उठा लिया।

आर्यसमाज में रहकर ही लालाजी ने जनहित के कार्यों में भाग लेना सीखा था। 1899 में जब सम्पूर्ण उत्तर भारत अकाल की चपेट में आ गया, तब लालाजी अपने साथियों को लेकर अकाल-राहत-कार्यों में जुट गए। उन्होंने अनाथ बालकों को 'आर्य अनाथालय फीरोजपुर' में प्रवेश कराया, जबकि ईसाई मिशनरी उन्हें लेने के लिए तैयार बैठे थे। 1905 में काँगड़ा में भयंकर भूकम्प से जन-धन की अपार क्षति हुई। उस समय भूकम्प-पीड़ितों की सहायता के लिए उन दुर्गम पर्वतीय स्थलों पर पहुँचे। इस कार्य में डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर के छात्र लालाजी के साथ थे। उड़ीसा, मध्यप्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त में जब 1907 में भयंकर दुष्काल पड़ा तब लाला लाजपतराय तुरन्त सहायता कार्यों में जुट गए।

अब तक लालाजी देश के राजनैतिक क्षितिज पर एक प्रकाशमान नक्षत्र की भाँति उभर चुके थे। 1920 में विदेश-यात्रा से लौटने पर उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित असहयोग-आन्दोलन का समर्थन किया। इसी वर्ष वे कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बनाए गए। 1924 में उन्होंने 'स्वराज्य पार्टी' का गठन किया और केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गए। स्वामी श्रद्धानन्द और पं. मदनमोहन मालवीय की ही भाँति लालाजी का कांग्रेस की अल्पमत वालों के प्रति तुष्टीकरण की नीति से घोर मतभेद था। इसीलिए उन्होंने हिन्दु महासभा के कार्य में सहयोग दिया। उन दिनों हिन्दू सभा सच्चे राष्ट्रवादी नेताओं की दृष्टि से संकीर्ण या साम्प्रदायिक जमात नहीं समझी जाती थी। इसलिए उपर्युक्त नेताओं का इस संस्था से पूर्ण सहयोग रहता था। 1925 में हिन्दू महासभा के कलकत्ता-अधिवेशन के वे सभापति बनाए गए।

1928 में भारत की राजनैतिक स्थिति का जायज़ा लेने के लिए इंग्लैण्ड से सायमन-कमीशन यहाँ भेजा गया। कांग्रेस ने इसके बहिष्कार का निर्णय लिया। सारे देश में सायमन-कमीशन के विरोध के स्वर गूँजने लगे। कमीशन के सदस्य जिन-जिन नगरों में गए, वहाँ-वहाँ उसके विरोध में कमीशन का बहिष्कार करने का निश्चय हुआ।

30 अक्तूबर 1928 को कमीशन लाहौर आया। नागरिकों ने कमीशन के सदस्यों को रेलवे स्टेशन पर ही काले झण्डे दिखाने का निश्चय किया। पंजाब सरकार ने 144 धारा लगा दी। तथापि सैकड़ों लोग स्टेशन पर एकत्र हो गए। 'सायमन कमीशन वापस जाओ' के नारों से आकाश गूँज उठा। पुलिस को डण्डे बरसाने का आदेश मिला। निहत्थे नागरिकों पर झण्डा-प्रहार होने लगा। अंग्रेज़ सार्जेंट सांडर्स ने लालाजी की छाती पर लाठी का प्रहार किया। भारत के इस बूढ़े शेर को मार्मिक आघात पहुँचा। उसी सायंकाल आयोजित जन-सभा में नरकेसरी लाला

thearyasamaj.org

लाजपतराय ने गर्वनापूर्ण स्वर में कहा, "मेरे शरीर पर पड़ी विदेशी सरकार की एक-एक लाठी अंग्रेज़ी राज्य के कफन की कील साबित होगी!" इसी लाठी-प्रहार से पीड़ित होकर लाला लाजपतराय का 17 नवम्बर 1928 को निधन हो गया।

लालाजी का व्यक्तित्व बहु-आयामी था। वे एक श्रेष्ठ वक्ता, प्रभावशाली लेखक, सार्वजनिक नेता और कार्यकर्ता, समर्पित समाज-सेवक, शिक्षाशास्त्री, गम्भीर चिन्तक तथा विचारक थे। उन्होंने उर्दू तथा अंग्रेज़ी में अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की। भारत तथा विदेश के कतिपय महापुरुषों के उनके द्वारा लिखित जीवन-चरित अत्यन्त लोकप्रिय हुए। सम्राट् अशोक, शिवाजी, स्वामी दयानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी तथा योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन-चरित तो उन्होंने लिखे ही, इटली के देशभक्त गैरीबाल्डी तथा मैज़िनी के जीवन-चरितों ने उन्हें अभूतपूर्व ख्याति दिलाई। देशवासियों में स्वातन्त्र्य चेतना के जागृत करने में इन ग्रन्थों की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण मानी गई कि विदेशी शासन ने इन जीवनियों पर ही प्रतिबंध लगा दिया। भारतीय शिक्षा तथा अर्थशास्त्र जैसे विषयों पर भी उन्होंने प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे। उनकी लिखी 'दि आर्यसमाज' नाम पुस्तक 1914 में इंग्लैण्ड से प्रकाशित हुई। लाला जी ने अपनी आत्मकथा भी लिखी है। ▪

हमारे पूर्वज

– मैथलीशरण गुप्त

उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन अतीव अपार है,
गाते नहीं उनके हमीं गुण गा रहा संसार है।
वे धर्म पर करते निछावर तृण-समान शरीर थे,
उनसे वही गम्भीर थे, वर वीर थे, ध्रुव धीर थे।
उनके अलौकिक दर्शनों से दूर होता पाप था,
अति पुण्य मिलता था तथा मिटता हृदय का ताप था।
उपदेश उनके शान्तिकारक थे निवारक शोक के,
सब लोक उनका भक्त था, वे थे हितैषी लोक के।

महर्षि दयानन्द सेवाधाम ट्रस्ट, सैक्टर 7, फरीदाबाद

सर्वे सन्तु निरामयाः

प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र महर्षि दयानन्द सेवा धाम ट्रस्ट (पंजीकृत) आर्य समाज सैक्टर 7ए, फरीदाबाद (हरि.) चिकित्सालय में सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज पंच तत्वों (मिट्टी, पानी, धूप, हवा, आकाश) के माध्यम से किया जाता है। किसी प्रकार की दवाई का प्रयोग नहीं किया जाता है।

आर्य समाज की प्रमुख गतिविधियों में से एक प्राकृतिक चिकित्सा लगभग दस वर्षों से निरन्तर ही समाज के लोगों को निरोगी करती चली आ रही है।

महिला तथा पुरुषों के इलाज की अलग-अलग व्यवस्था है। सक्षम तथा कुशल स्टाफ समाज की सेवा में कार्यरत हैं।

निराश न हों तथा जीर्ण रोगों के इलाज के लिए सम्पर्क करें।

नोट : साढे तीन वर्षीय एन.डी.डी.वाई. डिप्लोमा कोर्स के लिए सम्पर्क करें।

– चिकित्सा अधिकारी डा. विजेन्द्र सिंह (सागर जी), दूरभाष : 9210291284

thearyasamaj.org

लोह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

- स्वामी सदानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द 1876 ईस्वी में पंजाब आए। उनके शुभागमन से इस वीर भूमि के निवासियों में चेतना का संचार हुआ। नवजागरण की इस शुभ वेला में सरदार भगवान सिंह के घर पौष मास विक्रम संवत् 1934 की पूर्णिमा को बालक केहर सिंह ने जन्म लिया। यही बालक आगे चलकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के नाम से विख्यात हुआ। लुधियाना जिला ने राष्ट्र को कई विभूतियां दी हैं। राष्ट्रवीर लाजपतराय, यशस्वी दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द तथा स्वाधीनता सेनानी साहित्यकार स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक भी इसी की देन थे। इसी जिला के मोही ग्राम में जन्म लेकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने इसे गौरवान्वित किया। श्री पं. सत्यव्रत जी सिन्तालंकार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी भी इसी जिला के हैं।

परिवार

बालक केहर सिंह के पूर्वज हल्दी घाटी से आकर यहाँ बसे थे। उनकी रगों में राजस्थान के शूरवीरों व बलिदानियों का उष्ण रक्त बह रहा था। वीरभूमि पंजाब के वातावरण में पल कर केहरसिंह यथा नाम तथा गुण बन गये। सरदार भगवान सिंह जी की पत्नी का देहान्त हो गया इसलिए केहर सिंह का लालन-पालन उनके ननिहाल कस्बा लताला में हुआ।

आर्य समाज का परिचय

लताला में श्री पं. बिशनदास जी उदासी महात्मा से बैद्यक पढ़ते रहे। इन्हीं पण्डित जी के सत्संग से वैदिक धर्म के संस्कार विचार मिले और इन्हीं महात्मा जी के डेरे पर महात्माओं के सत्संग से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का संकल्प करके विरक्त हो गये।

गृह त्याग और संन्यास

पिता जी की चाह थी कि वह सेना में जनरल कर्नल बनें परन्तु केहर सिंह वैभवशाली परिवार को त्यागकर संन्यासी बन गये। धर्मशास्त्रों का पठन पाठन संस्कृत का अभ्यास व उपदेश देते हुए कई वर्ष केवल कौपीनधारी रहे। आर्य समाज के नेताओं व विद्वानों में सर्वप्रथम आपने ही (1957 विक्रम) संन्यास लिया।

विदेशों में

संन्यास लेकर आप 3-4 वर्ष के लिए दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में धर्म प्रचार करते रहे। इसके लिए किसी सभा संस्था से आपने कोई आर्थिक सहायता नहीं ली। स्वदेश लौटे तो पं. बिशनदास जी की आज्ञा से विधिवत आर्य समाज के कार्य में जुट गए। योगाभ्यास, स्वाध्याय, राष्ट्रभाषा प्रचार, ग्राम सुधार, ब्रह्मचर्य, व्यायाम आदि के लिए कई वर्ष रामामण्डी को केन्द्र बनाकर कार्य किया। फिर लुधियाना को केन्द्र बना लिया। आपके तप, तेज व त्याग से सारा पंजाब प्रभावित हुआ।

पुनः विदेश यात्रा

1914 ई. में आप मारीशस में वेद प्रचार के लिए गये। तीन वर्ष तक आपने वहाँ धर्मोपदेश करते हुए वहाँ के लोगों को संगठन सूत्र में बांधा। भारत के राष्ट्रीय हितों की वहाँ रक्षा की। राष्ट्रभाषा का प्रचार किया। जनता का नैतिक उत्थान तथा चरित्र निर्माण किया।

स्वतन्त्रता संग्राम में

1916 ई. में स्वदेश लौट कर आर्य समाज के कार्य के साथ राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। 1919 ई. में मार्शल ला के दिनों में पण्डित मदनमोहन मालवीय जी की प्रेरणा पर आपने कांग्रेस को विशेष सहयोग दिया। 1920 ई. में बर्मा गये। वहाँ धर्म प्रचार के साथ स्वराज्य का प्रचार किया। माण्डले की ईदगाह से 25,000 के जनसमूह में स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ स्वराज्य का खुल्लम खुल्ला प्रचार किया। अंग्रेज सरकार की आँख में आप कांटे की भांति चुभने लगे।

काल कोठरी में

1930 ई. में पंजाब कांग्रेस के सब नेता जब जेलों में बन्द थे तो आपने सत्याग्रह को चलाया। डा. मुहम्मद आलम के जेल जाने पर आप कुछ समय के लिए प्रदेश कांग्रेस के प्रधान भी बनाए गये। इस काल में आंध्र प्रदेश के विख्यात कांग्रेसी नेता व स्वतन्त्रता सेनानी पं. नरेन्द्र (हैदराबाद) इत्यादि को अपने जेल भेजा।

1930 ई. में लाहौर में कांग्रेस की एक प्रचण्ड सभा

thearyasamaj.org

से अध्यक्ष पद से एक भाषण देने पर आपको बन्दी बना लिया गया। आपकी गतिविधियों के कारण श्रीमद्‌यानन्द उपदेशक विद्यालय की सरकार ने तलाशी ली। स्वराज्य संग्राम में केवल आर्य समाज के उपदेशक विद्यालय की ही तलाशी ली गई।

सेना विद्रोह का आरोप

1942 ई. में भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रचार कर रहे थे कि आपने भापड़ौदा कस्बा हरियाणा में एक बैठक बुलाकर हरियाणा के चौधरियों से कहा कि सेना में कार्य करने वाले अपने पुत्रों तथा सगे सम्बन्धियों से आप कहें कि सत्याग्रहियों पर गोली मत चलाएं। आप की हरियाणा यात्रा का अपूर्व प्रभाव पड़ा। सरकार यह सहन न कर सकी। वायसराय के विशेष आदेश से आपको शाही किला लाहौर में बन्द करके अमानुषिक यातनाएं दी गईं। किला से छोड़े गऐ तो विश्व युद्ध की समाप्ति तक दीनानगर में नजरबन्द किए गए। आप पर कई प्रतिबन्ध लगाए गए। जब आप शाही किला में बन्दी बनाए गए तो पंजाब के गवर्नन के वध का षड्‌यन्त्र करने का भी आरोप लगाया गया।

क्रांतिकारियों को शरण

आप दस वर्ष श्री मद्‌दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य पद पर आसीन रहे और सैंकड़ों योग्य शिष्य आर्य समाज को प्रदान किये जो उनके चरण चिह्‌नों पर चलते हुए आर्य समाज का प्रचार कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिष्ठाता वेद प्रचार का कार्यभार भी आपके कन्धों पर था। तब आपने समय-समय पर कई भूमिगत क्रांतिकारियों को लाहौर में शरण दी।

1938 ई. में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना करके इसे मानव केन्द्र बनाया। धम्र प्रचार संस्कृत प्रसार का तो यह केन्द्र हीहै। सहसों रोगी प्रतिदिन यहाँ धर्मार्थ औषधालय से चिकित्सा करवाते हैं। इअस आश्रम में भी देश के स्वतन्त्र होने तक कई क्रांतिकारी देशभक्त भूमिगत होने पर शरण पाते रहे, महात्मा गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने के लिए स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज के सुशिष्य यति जी को विशेष रूप से दयानन्द मठ से ही सत्याग्रह करने की आज्ञा दी थी। इस समय उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी पूजय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज इस मठ के अध्यक्ष थे।

नवाबों से टक्कर

आपने मालेरकोटला, लोहारू व निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सफल मोर्चे लगा कर जन अधिकारों की रक्षा की। आपके सफल व कुशल नेतृत्स से आर्य समाज को अपूर्व विजय प्राप्त हुई। महात्मा गांधी आदि नेता भी आपकी कार्यक्षमता से अत्यन्त प्रभावित हुए। इन संघर्षों से स्वराज्य आन्दोलन की गति तीव्र हुई।

लहुलुहान

लुहारू में तो आप पर कुल्हाड़ों व लाठियों से प्राण घातक प्रहार किये गये। आजन्म ब्रह्मचारी 65 वर्ष की आयु में इन भयंकर प्रहारों में भी अडिग खड़े रहे। आप के सिर पर इन घावों के इक्कीस चिह्‌न थे। एक तो बहुत बड़ा निशान दूर से ही दीख जाता था।

विदेशों में राष्ट्रीय दूत

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् भी एक बार आप पूर्वी अफ्रीका में आर्य समाज के प्रचार के लिए गए। देश स्वतन्त्र हुआ तो भारत सरकार की विशेष प्रार्थना पर आप पूर्वी अफ्रीका व मारीशस की यात्रा पर गये। आप ने इन देशों में रहने वाले भारतीयों की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक अवस्था का अध्ययन किया और विदेशों में भारतीय हितों की रक्षा के लिए बड़ा काम किया। मारीशस की स्वतन्त्रता के लिए आपने मार्ग प्रशस्त करने के लिए बड़ा काम किया।

बहुमुखी प्रतिभा-तेजस्वी व्यक्तित्व

अस्पृश्यता निवारण व दलितोद्धार के लिए आपने अविस्मरणीय काम किया। स्वदेशी प्रचार, गोरक्षा, राष्ट्रभाषा प्रचार, स्त्री शिक्षा के लिए आपने सारे देश का कई बार भ्रमण किया। पीड़ित सेवा के लिए सदैव अग्रणी रहे। आप कई भाषाओं के विद्वान लेखक, सुवक्ता व इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान थे। आप वर्षों आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के कार्यकर्त्ता प्रधान रहे।

महाप्रयाण

'Sound mind in a sound body' बलवान शरीर में बलवान आत्मा की उक्ति आप पर अक्षरतः चरितार्थ होती है। भीमकाय स्वतन्त्रानन्द इतिहास में वर्णित हनूमान, भीष्म, दयानन्द सरीखे ब्रह्मचारियों की कड़ी में से एक थे। 13-4-1955 को बम्बई में आप को निर्वाण प्राप्त हुए।

thearyasamaj.org

लेख का काम बन्द न हो

- स्वामी आत्मानन्द

महर्षि दयानंद के जीवन का लक्ष्य था सच्चे ईश्वर की प्राप्ति और ईश्वर की इच्छाअनुसार कर्म करना। अपना यह लक्ष्य जीवन भर उन की दृष्टि से सन्मुख रहा और अन्तिम स्वांस यह कहते हुए लिया कि "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो"। अपने परम गुरु महर्षि की भान्ति ही श्री पं. लेखराम जी के जीवन में भी आदर्श की पूजा हम इसी प्रकार पाते हैं।

पण्डित लेखराम जी के जीवन काल में और प्रकार की लेख माला की आवश्यकता थी और अंब और प्रकार की लेख माला चाहिए। उस समय उनकी टक्कर इसलाम, ईसायत और रूढ़ी वाद से थी परन्तु अब विद्वानों के लिए लिखे हुए वेद के अशुद्ध भाष्यों के आधार पर पाश्चात्य शिक्षा से शिक्षित अनेक महानुभाव आज कल वेदों के ऊपर अनेक प्रकार के कुतर्क कर रहे हैं और वेदों के विरोध में अनेक ग्रन्थ लिख रहे हैं। इन विरोधी ग्रन्थों के मुकाबले में आर्य समाज का लिखा हुआ साहित्य नहीं के तुल्य हैं ऐसा साहित्य लिखने वाले विद्वान हैं नहीं, ऐसी बात नहीं है। इन लेखों और पुस्तकों का मुंह तोड़ उत्तर देने वाले अनेक विद्वान हैं। परन्तु प्रथम तो योग क्षेम की चिन्ता में ही उनका सारा समय लग जाता है और यदि समय बचा कर कुछ लिखा भी तो उस साहित्य के बेचने का भार भी उन्हीं के सिर पर आ पड़ता है। जो पैसे उन्होंने प्रकाशन में लगा दिए होते हैं।

पुस्तकें बिकने पर दे आवें तो औरक ुछ लिखें परन्तु वर्षों तक वह पुस्तकें बिकती ही कहीं। क्योंकि आर्य समाज के सभासदों में नए साहित्य को खरीद कर स्वाध्याय करने की प्रथा समाप्त हो चुकी है। मैंने इन्हीं दिनों में आर्य समाज के दो चोटी के विद्वानों को अपनी लिखी हुई पुस्तकें बोरी में अपने साथ लाते हुए देखा है। इस लिए जहाँ हमें पण्डित जी के शब्दों में आर्य जनता से यह कहना है कि "लेख का काम बन्द न हो" उस के साथ हम बल पूर्वक यह भी कहेंगे कि "स्वाध्याय का काम भी बन्द न हो।"

कि सी भी वेद विरोधी साहित्य के उत्तर में कोई भी विद्वान जो कोई पुस्तक लिखे हर एक आर्य सभासद का यह कर्तव्य होना चाहिये कि वह उसे मंगा कर अवश्य पढ़े। इससे आर्य सभासदों के ज्ञान की वृद्धि होगी, लेखकों को उत्साह मिलेगा और विरोधी साहित्य का मुंह तोड़ उत्तर दिया जा सकेगा।

आर्य वद्विानों से भी यह निवेदन करूंगा कि वह लिखने के पश्चात यदि अपनी पुस्तक न छपवा सकते हों तो जितना भी अपने परिश्रम के लिए उचित समझते हों वह किसी भी सभा अथवा समाज से लेकर उस पुस्तक को उस सभा या समाज के अर्पण कर दें, जिससे कि बहुत शीघ्र छप कर साधारण मूल्य पर बेची जा सके।

मैं सभाओं और आर्य समाजों से भी निवेदन करूंगा कि वह ऐसी पुस्तकों को तत्काल छपवा कर बेचने का अवश्य प्रबन्ध करें और ऐसी पुस्तकों को अवश्य खरीदने और पढ़ने का आर्य समाजों और आर्य सभासदों को आदेश दें।

यदि हम वीर पण्डित लेखराम जी के इस परम पवित्र बलिदान दिवस को मनाना चाहते हैं तो उस के मनाने का सब से उत्तम उपाय यह है कि वेद विरोधी साहित्य के उत्तर लिखने का विद्वान संकल्प करें और आर्य जनता इस साहित्य को खरीदने और पढ़ने का संकल्प करे, तभी हम श्री पण्डित लेखराम जी के बलिदान दिवस को मनाते हुए उनके इस आदेश का अनुसरण कर सकेंगे कि 'लेख का काम बन्द न हो।'

■

thearyasamaj.org

उपनयन संस्कार क्यों करायें?

- कन्हैया लाल आर्य

उपनयन संस्कार इसलिए किया जाता है कि इसके बाद बालक या बालिका वेदादि शास्त्रों अध्ययन का प्रारम्भ आजकल की भाषा में 'शिक्षा का प्रारम्भ' करना है। उपनयन संस्कार में मुख्य कर्म यज्ञोपवीत का धारण करना है। जो लोग अपनी सन्तान को सुसंस्कृत तथा गुणवान बनाना चाहते हैं उनकी सन्तान का उपनयन जल्दी से जल्दी हो जाना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती संस्कार विधि में महर्षि मनु का उद्धरण प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं-

ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यं विप्रस्य पञ्चमें।

राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमें।।

अर्थात् जिनको शीघ्र विद्या बल और व्यवहार करने की इच्छा हो और बालक भी पढ़ने में समर्थ हुए हों तो ब्राह्मण बनने के इच्छुक लड़के का जन्म व गर्भ से पांचवें, क्षत्रिय बनने के इच्छुक लड़के का जन्म व गर्भ से छठे और वैश्य बनने के इच्छुक लड़के का जन्म व गर्भ से आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत करें।

महर्षि मनु ने उपनयन की अन्तिम अवधि इस प्रकार की है-सोलह वर्ष तक ब्राह्मण का, बाईस वर्ष्ज्ञ तक क्षत्रिय का निर्धारित समय पर संस्कार न होने पर श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा निन्दित तथा पतित माने जावें।

यज्ञोपवीत या उपनयन संस्कार का आज भी इतना महत्व है कि जिनका यज्ञोपवीत संस्कार नहीं होता उनका विवाह से पहले नाममात्र का यज्ञोपवीत संस्कार कर दिया जाता है ताकि यह न कहा जा सके कि इनका यह संस्कार नहीं हुआ।

प्राचीन काल में यज्ञोपवीत संस्कार को एक सार्वजनिक संस्कार बनाने का एक मुख्य कारण यह भी था कि हर किसी बालक को मान प्रतिष्ठा रखने के लिए सबके सामने यह प्रकट करना पड़ता था कि उसका बच्चा अब आचार्य के पास विद्याध्ययन करने के लिए जाने लगा है। जो व्यक्ति अपनी सन्तान का यह संस्कार नहीं करता था वह समाज में पतित समझा जाता था। इसी विचारधारा का यह परिणाम था कि सब कोई उपनयन करवाते थे। जो यज्ञोपवीत संस्कार नहीं करवाता था। वह 'सावित्री पतित' कहलाता था।

यज्ञोपवीत को वेदों में परम पवित्र कहा गया है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है-

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यसऽहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

यज्ञोपवीतमसि सज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।

यह ब्रह्मसूत्र अत्यन्त पवित्र है जो पूर्वकाल से चला आता है। प्रजापति के साथ ही आदिकाल से वर्तमान है। यह आयु का देने वाला है, जीवन में आगे ही आगे ले जाने वाला है। यह यज्ञोपवीत निर्मल है जो बल को, तेज को देने वाला है। हे बालक! तू यज्ञोपवीत है, तुझे यज्ञोपवीत से अपने समीप लाता हूँ।

यज्ञोपवीत आलंकारिक तौर पर आचार्य तथा शिष्य को एक दूसरे के साथ बांधने का प्रतीक है तभी इसे निकट ले जाना वाला कहा।

महर्षि मनु ने यज्ञोपवीत का धारण करना अनिवार्य बतलाया है। यज्ञोपवीत को वैदिक संस्कृति के चिह्न के रूप में भी धारण किया जाता है। यज्ञ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति को अनिवार्य रूप से यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए अन्यथा व हयज्ञ करने का अधिकारी नहीं है। ऐतरेय आरण्यक में ऋषि कहता है "यज्ञोपवीती एव अधीयीत यजेत याजयेत वा यज्ञस्य प्रसृत्यै'8

वैदिक संस्कृति में तीन प्रकार हैं- शिखा, सूत्र तथा सन्ध्या। इन तीनों का पालन करना वैदिक संस्कृति में अनिवार्य है तभी वही व्यक्ति आर्य कहलाने का अधिकारी है।

यज्ञोपवीत में तीन सूत्र (धागे) होते हैं जो क्रमशः तीन ऋणों के सूचक हैं (1) ऋषि ऋण (2) पितृऋण (3) देव ऋण। प्रथम ऋण ब्रह्मचर्य धारण कर वेद विद्या के अध्ययन से, द्वितीय ऋण धर्मपूर्वक गृहस्थाश्रम में

thearyasamaj.org

प्रवेश कर सन्तानोत्पति से तथा तृतीय ऋण गृहस्थ का त्याग कर देश सेवा के लिए अपने को तैयार करने से निवृत होते हैं, इसलिए ये तीनों ऋण ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ इन तीनों आश्रमों के सूचक हैं। यही कारण है जब व्यक्ति इन तीनों ऋणों से मुक्त हो जाता है, तीनों आश्रमों को लांघ जाता है तब इस सूत्र के विधान के अनुसार त्याग देता है फिर इसे धारण नहीं करता और सन्यासाश्रम में प्रविष्ट हो जाता है।

यज्ञोपवीत बांये कंधे पर पहनकर दांये हाथ से नीचे से निकाला जाता है इस प्रकार यह हृदय का भी स्पर्श करता है। किसी भी भार को उठाने के लिए उसे कन्धों पर धारण करना ही कहा जाता है। इस भार को व्यक्ति तभी उठा सकता है जब उस का हृदय स्वीकार कर ले। यज्ञोपवीत यह बतलाता है कि हम अपने आपको कर्तव्य पालने के लिए हृदय से स्वीकार करते हैं।

क्या स्त्रियाँ भी यज्ञोपवीत पहन सकती हैं?

कुछ पोंगा पण्डितों तथा तथाकथित धर्म के ठेकेदारों ने यह भ्रान्त धारणा फैला दी कि स्त्रियों को यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार नहीं है। अभी भी कुछ पुरुष छः धागों का यज्ञोपवीत पहिनते हैं। ऐसा वे इसीलिए करते हैं कि तीन धागों का तो पुरुष का यज्ञोपवीत और तीन धागों का उसकी पत्नी का। ऐसा वे लोग करते हैं जो अभी भी स्त्रियों के लिए यज्ञोपवीत का विधान नहीं मानते। यह एक भ्रान्त धारणा है। पति पत्नी दोनों को ही यज्ञोपवीत पहिनना चाहिए। यह एक शुभ कर्म है, वेद की आज्ञा है, फिर इस वेद की आज्ञा से स्त्रियों को कैसे वन्चित किया जा सकता है। यज्ञोपवीत का सम्बन्ध विद्या से है और विद्या का अधिकार सब को है। मध्यकाल में नारी जाति के यज्ञोपवीत तथा वेदाध्ययन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। यह तो महर्षि दयानन्द की कृपा है कि उन्होंने नारी जाति को पुनः यज्ञोपवीत पहिनने तथा वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया है। आज गुरुकुलों में लाखों ब्रह्मचारीणियाँ यज्ञोपवीत धारण करती हैं तथा वेद भी पढ़ रही हैं। स्वयं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने उत्तरप्रदेश में ठाकुर विक्रम सिंह जी की ताई का यज्ञोपवीत कराया था।

वैदिक संस्कृति में कन्याओं को यज्ञोपवीत धारण करने का वैसा ही अधिकार था जैसा बालकों को। दूसरी बात यह कि वैदिक काल में स्त्रियां वेद शास्त्र पढ़ा करती थी। गोभिलीय गृह्यसूत्र में लिखा है-

'प्रावृतां यज्ञोपवीतिनीम् अभ्युदानयत् जपेत सोमोऽददत् गन्धर्वाय इति'

अर्थात कन्या को कपड़ा पहिने हुए, यज्ञोपवीत धारण किए पति के निकट लाये तथा यह मन्त्र पढ़ें -'सोमोऽददत्।' इस मन्त्र में स्पष्ट है कि कन्या यज्ञोपवीत धारण किए हुए हो। कन्याओं का उपनयन संस्कार होता था। यह निम्न श्लोक से भी स्पष्ट है-

पुराकल्पे हि नारीणां मौञ्जी बन्धनमिष्यते।
अध्यापनं च वेदानां सावित्री वाचनं तथा।।

अर्थात् प्राचीन काल में स्त्रियों का मौञ्जीबन्धन - उपनयन संस्कार होता था, वे वेदादि शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन किया करती थीं।

कादम्बरी महाकाव्य में महाकवि बाणभट्ट ने महाश्वेता का वर्णन करते हुए लिखा है-

'ब्रह्मसूत्रेण पवित्रीकृतकायाम्' अर्थात जिसका शरीर ब्रह्मसूत्र के धारण के कारण पवित्र था। ब्रह्मसूत्र यज्ञोपवीत का ही दूसरा नाम है। ब्रह्मसूत्र का अर्थ सूत्रग्रन्थों तथा संस्कृत के कोषों में यज्ञोपवीत किया गया है। इसे ब्रह्मसूत्र, यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत आदि अनेक नामों से स्मरण किया जाता है।

परन्तु खेद की बात है कि मध्यकाल में हमारे पोंगा पंडितों ने वेद के अनर्गल अर्थ बताने शुरु कर दिये। इसका दुष्प्रभाव यह हुआ कि हम अपने मूल सिद्धान्तों के प्रति उपेक्षा भाव करने लगे। इसके अतिरिक्त मुसलमानों के शासन काल में बलपूर्वक वैदिक संस्कृति को नष्ट करने के कुप्रयास भी किए गए। मुस्लिम शासकों ने असंख्य लोगापें की चोटियों कटवाई, यज्ञोपवीत उतरवाये और कई क्रूर शासकों ने यज्ञोपवीत न उतारने वालों को मौत के घाट उतार दिया। इस प्रकार यज्ञोपवीत धारण करने का प्रचलन धीरे-धीरे बन्द होने लगा और ब्राह्मणों ने भी यज्ञोपवीत पहिनने का सम्पूर्ण अधिकार अपने पास रख लिया। इतिहास में ऐसा आता है कि शिवाजी महाराज को भी यज्ञोपवीत पहिनाने से ब्राह्मणों ने इन्कार कर दिया और बहुत अधिक दक्षिणा प्राप्त करने पर उन्हें यज्ञोपवीत तो धारण कर दिया गया परन्तु गायत्री का उपदेश उसे फिर भी नहीं दिया गया। परन्तु सौभाग्य की बात है कि आर्य समाज के प्रर्वतक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने

thearyasamaj.org

आकर न केवल स्त्रियों को यज्ञोपवीत पहिनने का अधिकार ही दिलाया बल्कि वेद पढ़ने पढ़ाने का अधिकार भी दिया। आज पाश्चात्य सभ्यता के कारण हमारे युवक युवतियाँ अच्छे संस्कारों से विमुख होते जा रहे हैं। आज वह त्यागपूर्वक भोग करने के स्थान पर भोगवादी प्रवृत्ति को अपना रहे हैं। आज आवश्यकता है नवयुवकों नवयुवतियों में अच्छे संस्कारों की। यज्ञोपवीत संस्कार इनमें एक प्रमुख एवं अति महत्वपूर्ण संस्कार है। अतः विद्या अध्ययन के प्रतीक के रूप में तथा वैदिक संस्कृति के चिह्न रूप में सभी नर-नारियों को यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए।

■

मरेंगे, पर भागेंगे नहीं!

- स्वामी अमृतानन्द

सन् 1798 में जब स्विटरलैण्ड पर चढ़ाई करने के लिए फ्रांस की विस्तृत सेना बिल्कुल सरहद पर आ गई तो वहाँ के लोग बहुत घबरा कर अपने देश की मारगार्टन नामक एक पहाड़ी पर जमा हुए। वहाँ वह इस बात पर विचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिये? उन्हें कोई उपाय सूझा नहीं, यह देख उनमें से आलायस रेडिंग नामक एक वीर सरदार आगे बढ़ा और बोला- "भाइयों। बड़ी कठिन समस्या उपस्थित है। हमारे मित्र हम लोगों को छोड़ गए और शत्रु हमको घेरे हुए हैं। अब यह निश्चय होना चाहिए कि इसी पहाड़ी पर ऐसे संकट के समय हम लोगों के पूर्वजों ने जो शूर वीरता दिखलाई थी वही आज हमको दिखलानी चाहिये अथवा और कुछ करना चाहिए। मौत तो सामने मुँह फैलाये खड़ी है। जिसे उसका भय हो वह यहाँ से निसंकोच चला जावे। उसे हम बुरा नहीं कहेंगे। ऐसे कठिन अवसर पर एक दूसरे के डर से कोई काम करना अच्छा नहीं शत्रु को सामने आते हुए देखकर, स्वयं भागकर दूसरों को संकट में डालने वाले हजार आदमी हमें नहीं चाहियें-हमें तो सौ आदमी ऐसे चाहियें जो दृढ़ता से युद्ध क्षेत्र में खड़े होकर लड़ सकें। मैं अपने लिये तो कहता हूँ कि कितना ही भारी संकट आवे-चाहे प्रत्यक्ष काल ही सामने आकर क्यों न खड़ा हो जाए, मैं पीछे न हटूंगा, मरूंगा पर पीछे पैर नहीं हटाऊंगा। तुम सबकी भी यदि ऐसी ही दृढ़ता हो तो तुम में से कोई दो आदमी अगुवा बन कर आगे बढ़ें और ऐसी प्रतिज्ञा करें। यह सुनते ही सब लोगों के हृदय में स्वदेशाभिमान की बिजली दौड़ गई और वह एक दम बड़े जोर से चिल्ला उठे, "वीरवर! हम सब तैयार हैं। तुम्हें छोड़कर कदापि नहीं जायेंगे। तुम्हारे ही पीछे रहेंगे।" इसके बाद इसी दृढ़ता के साथ वे लड़े भी। परन्तु उस समय उनकी जीत नहीं हुई और फ्रेंच लोगों ने स्विटरलैण्ड को जीत कर पादाक्रांत कर लिया। परन्तु उपर्युक्त जिन पुरुषों ने पीछे न हटने की प्रतिज्ञा की थी उनमें से एक भी मनुष्य फ्रेंचों के हाथ नहीं पड़ा और न उनका दास बना। उनका मान आज तक स्विटजरलैण्ड में हो रहा है। ■

वीर शांति प्रकाश

- स्वामी अमृतानन्द

धर्मवीर शांति प्रकाश देहली के श्रीराम रत्न शर्मा टिकट कलक्टर के सुपुत्र थे। 27 जुलाई को उस्मानाबाद जेल में उन पर बड़ी सख्ती की गई, जेल में टाईफाईड हो गया। उल्टज्ञ इलाज होने के कारण वीर गति को प्राप्त हुए। उन्हें इस शर्त के साथ छोड़ने के लिये कहा गया था कि मुआफी मांग ले परन्तु उस दृढ़व्रती वीर ने इन्कार कर दिया, इस पर उसके पिता को खबर दी गई। वे उस्मानाबाद गए। पिता ने मुआफी की शर्त के साथ जीवन-मृत्यु के बीच झूलते हुए अपने पुत्र को जेल से मुक्त कराना स्वीकर न किया।

सत्य

- सत्यमेव जयते
- सत्यवादी दयानन्द-मुझे तोप के आगे रख कर कहो कि झूठ बोलो तो मैं झूठ नहीं बोलूंगा।
- पहले आर्य समाजियों सत्य बोलते थे और कोर्ट भी उनकी गवाही को सत्य मानती थी।
- सत्य तीनों कालों में एक जैसा रहता है।

thearyasamaj.org

संतान के कर्त्तव्य

– सुभाष चन्द्र गुप्ता

माता-पिता की सेवा के अपने परम कर्तव्य को पूर्ण करने के लिए संतान को निम्नलिखित बातों पर आचरण करना चाहिए।

1. दैनिक अभिवादन- संतान को प्रातःकाल उठते ही माता-पिता के चरण-स्पर्श और अभिवादन नमस्ते करके उनके आशीर्वाद लेने चाहिए।

2. मधुर, विनम्र भाषण- माता-पिता के उपकारों के प्रति संतान को कृतज्ञ होना चाहिए। यदि उनसे कोई त्रुटि भी हो जाए तो भी संतान को विनम्र और शांत भाव से ही उनको उस कमी के बारे में कहना चाहिए। ऐसी कोई भी चेष्टा नहीं होनी चाहिए, जिससे माता-पिता का हृदय आहत हो, उनका अनादर हो।

3. वृद्धावस्था में सेवा- वृद्धावस्थ्ज्ञा में मां-बाप की उपेक्षा करना एक बहुत बड़ा पाप है। इस अवस्था में संतान उनकी लाठी होती है, उनका सहारा होती है। इसलिए माता-पिता के भोजन और उनकी प्रत्येक आवश्यकता का पूरा ध्यान रखना चाहिए। यह कभी मत भूलें कि आपके लालन-पालन में उन्होंने कितनी यातनाएं, कितने कष्ट सहे, कितना परिश्रम किया और कितना तप तपा।

4. कुछ समय का सहवास- वृद्धावस्था में माता-पिता को प्रायः अकेलापन महसूस होता है। इसलिए अपने व्यस्त जीवन में से कुछ समय निकाल कर उनके पास अवश्य बैठें। इससे उनका हृदय प्रसन्न होगा, आपको आशीर्वाद मिलेंगे।

5. उनके लिए प्रेमपूर्वक भेंट- वृद्ध माता-पिता के लिए फल, मिठाई, वस्त्र तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ उन्हें अवश्य भेंट करें। इनसे उनके हृदय गद्-गद् हो जाएंगे। जिसने अपने मां-बाप का हृदय जीत लिया, उसी ने प्रभु को प्रसन्न कर लिया।

6. द्रव्य भेंट- उनको अपनी कमाई में से कुछ धनराशि अवश्य भेंट करें, ताकि वे उसे अपनी इच्छानुसार व्यय कर सकें, दान आदि दे सकें। याद रखें वह भेंट आपको कई गुना होकर प्राप्त होगी। आपकी कमाई में आपके कारोबार में उससे वृद्धि होगी।

7. जीवित माता-पिता का श्राद्ध-तर्पण-जब तक माता-पिता जीवित हों, आप उनकी उपरोक्त प्रकार से सेवा-सुश्रूषा करें। यही श्राद्ध (श्रद्धापूर्वक सेवा) है। यही तर्पण (सेवा से उनकी तृप्ति, प्रसन्नता) है। मरे हुओं के श्राद्ध/तर्पण से मृतक माता-पिता का कुछ भला नहीं होता। उससे तो केवल उसी का पेट भरता है, जिसको आप खिला रहे हैं। मरे हुओं का उससे कुछ नहीं संवरता। शास्त्रों के अनुसार, केवल जीवित माता-पिता की सेवा ही सच्चा श्राद्ध-तर्पण है।

कुछ मातृ-पितृ भक्त व्यक्तित्व एवं प्रेरक प्रसंग

1. अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की मां उनके बचपन में ही परलोक-गमन कर गई थी। परन्तु लिंकन एक मातृ-भक्त बालक थे। उन्होंने अपनी मां की शिक्षाओं को जीवन में उतारा और एक साधारण श्रमिक से राष्ट्रपति के उच्चतम पद को प्राप्त किया। ऐसी उच्चतम पद-प्रतिष्ठा को पाकर भी, लिंकन के चेहरे पर प्रायः एक उदासी की रेखा उभर आया करती थी। जब एक महिला ने उनसे इसका कारण पूछा, तब लिंकन ने नेत्र जल-प्लावित हो उठे। वे अपने नेत्रों को पौंछते हुए, गहरा श्वास लेकर, रुंधे स्वर में बोले-'देवि! मैं शैशव काल में ही मातृ-स्नेह से वंचित हो गया था। मेरी मां बड़ी साध्वी, धर्म-परायण और अत्यन्त परिश्रमी महिला थी। उसने मेरे हृदय में प्राणिमात्र के प्रति दया, करुणा और सेवा की भावना भरी। आज मेरे जीवन में जो भीग ुण हैं, वह उसी की शिक्षाओं के कारण हैं। मैं अमेरिका का सर्वाधिक सुखी व्यक्ति हूँ, परन्तु मुझे जिस क्षण भी अपनी मां का स्मरण आता है, मेरा मन दुःख से भर जाता है। कितनी अपार श्रद्धा थी राष्ट्रपति लिंकन के हृदय में अपनी माँ के प्रति! माँ के प्रति ऐसा आदर-भाव सचमुच व्यक्ति के जीवन को उज्ज्वल बना देता है।

2. महाराजा रणजीत सिंह की माँ ने एक दिन उनसे कहा, 'मेरी एक इच्छा है। क्या तुम उसे पूर्ण कर सकते हो?' महाराजा ने उत्तर दिया, 'माँ! आपके लिए यदि

thearyasamaj.org

जीवन भी न्यौछावर करना पड़े, तो भी पीछे नहीं रहूँगा। आपकी क्या आज्ञा है?' माँ ने कहा, 'मेरी इच्छा है कि जिस प्रकार तुम शैशव काल में मेरे साथ बिस्तर में सोया करते थे, वैसे ही मैं तुम्हें एक रात अपने बिस्तर में सुलाना चाहती हूँ।' महाराजा को बड़ा आश्चर्य हुआ, परन्तु माँ के आग्रह को शिरोधर्य करते हुए मान गए। महाराजा को तो बिस्तर में लेटते ही नींद आ गई परन्तु माँ जागती रही। थोड़ी देर ही बीती थी कि माँ ने पानी का एक लौटा बिस्तर में उडेल दिया। महाराजा झुंझला कर जग गए। बोले, माँ यह पानी कहाँ से आ गया? माँ ने कहा कि पानी पीने लगी थी तो लौटा बिस्तर में गिर गया। जैसे-तैसे महाराज फिर सो गए। परन्तु कुछ ही समय पश्चात् वैसी ही घटना पुनः घटी। माँ द्वारा ऐसी ही क्रिया दो-तीन बार दोहराई गई, तब महाराजा क्रोधावेश में आकर बोले, माँ! तुमको क्या हो गया है? तुम मुझे सोने क्यों नहीं दे रही? मैं तो अब आपके संग एक क्षण भी नहीं सो सकता। महाराजा के मुख से ऐसे शब्द निकलते ही माँ बोल उठी, बेआ! यह तो मैं तुम्हारी परीक्षा ले रही थी। तुम्हें अभिमान हो गया था कि तुम बहुत मातृभक्त हो। तुम तो केवल एक रात भी मेरे साथ नहीं सो सके, जबकि मैं शरद् ऋतु में भी तुम्हारे पेशाब द्वारा गीले किए गए बिस्तर में सारी रात बिता दिया करती थी। तुम्हें सूखे भाग पर सुलाती और स्वयं गीले भाग पर सोती रहती। तुम बार-बार पेशाब करते, मैं बार-बार तुम्हारा स्थान बदलती। ईस प्रकार मुझे एक ही रात में कई बार जागना पड़ता था।

यह सुनकर महाराजा रंजीत सिंह लज्जित हो गए। माँ के चरणों को पकड़ लिया। पश्चाताप के आँसू बह निकले। मातृ सेवा का अभिमान चूर-चूर हो गया। सोचिए! क्या माँ के दीर्घकालीन तप, त्याग और सहनशीलता को कभी भुलाया जा सकता है?

3. सर आशुतोष मुकर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति तथा कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे। भारत के वायसराय उनको विलायत भेजना चाहते थे परन्तु उनकी माँ उनके वहाँ जाने के विरुद्ध थी। मुकर्जी ने अपनी मातृभक्ति का परिचय देते हुए भारत के वायसराय की बात को ठुकरा दिया, जबकि उस काल में वायसराय की नाराजगी मोल लेने की बात कोई सोच भी नहीं सकता था। उनकी अपनी माँ के प्रति ऐसी अपूर्व निष्ठा को देखकर वायसराय भी दंग रह गए।

4. बंगाल की महान् विभूति श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की माँ विश्वप्रेम की साक्षात् प्रतिमा थीं। वे दरिद्रों और असहायों की सेवा में लगी रहती थीं। एक बार ईश्वरचन्द्र जी ने घर के लिए ठह रजाइयाँ बनवा कर भेजीं। उनकी माँ को जब पता लगा कि पड़ोस में रहने वाले कुछ लोग बिना रजाइयों के ठंड में ठिठुर रहे हैं, तो उसने सारी रजाईयाँ उनमें बांट दीं। ऐसी परोपकारी माँ ने करुणा, दया और सेवा के भव अपने बेटे के हृदय में संचारित किए। उन्हीं के कारण विद्यासागर स्वयं ज्ञान के सागर तो बने ही थे, साथ में दया और करुणा के भी सागर बने।

5. **श्रवण कुमार** के माता-पिता अंधे थे। उन्होंने वृद्धावस्था में तीर्थ-स्थानों का भ्रमण करने की इच्छा प्रकट की। परन्तु निर्धनता के कारण रथ या वाहन द्वारा उन्हें यात्रा कराना संभव नहीं था। साधारणतया ऐसी परिस्थिति में एक निर्धन पुत्र यात्रा कराने में अपनी असमर्थता प्रकट कर देता। परन्तु मातृ-पितृ भक्त श्रवण कुमार ने एक बहंगी बनवाई। उसके एक पलड़े में माँ का और दूसरे में बाप को बिठाया। स्वयं बहंगी को अपने कंधों पर उठाया और अनेक तीर्थ-स्थानों पर उनको घुमाकर, उनकी हार्दिक इच्छा पूर्ण की। धन्य था, ऐसा आज्ञाकारी एवं सेवाव्रती महान् 'श्रवण' जिसकी यशोगाथा आज भी युवावर्ग के समक्ष सेवा व त्याग का एक अनुपम प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत कर रही है।

6. माँ ने छुड़ाए बुरे काम- एक आदर्श माँ अपनी कल्याणमयी शिक्षाओं द्वारा किस प्रकार अपने पुत्र का उद्धार एवं सुधार कर सकती है, इसका उदाहरण निम्न घटना में द्रष्टव्य है-एक पुत्र अपनी माँ की असावधानी के कारण कुसंगत में पड़कर बिगड़ गया। वह डाकू बन गया। अब माँ ने उसे सुधारने का एक अद्‌भुत उपाय सोचा। जब भी वह पुत्र! किसी के घर में डाका डालकर आता तो माँ कमरे में एक कील गाड़ देती। किसी का खून करता तो एक और गाड़ देती। यह सिलसिला न जाने कब तक चलता रहा। एक दिन पुत्र ने माँ से पूछा, 'माँ, तुमने सारा कमरा कीलों से भर दिया है। यह सब क्या है?' 'पुत्र! ये तुम्हारे बुरे कर्म हैं। जब तू बुरा काम करता है, मैं एक कील गाड़ देती थी। अब तो पूरा कमरा कीलों से

thearyasamaj.org

भर गया है पर....' पुत्र का हृदय पश्चाताप से भर उठा। उस दिन से वह अच्छा काम करने लगा। हर दिन जब जब वह घर आता माँ को अच्छे कर्म बताता, माँ एक कील उखाड़ देती। कई वर्षों तक ऐसा चलता रहा। एक दिन सभी कीलें उखड़ गयीं, तब पुत्र ने शान से पूछा, 'माँ! अब तो कोई पाप नहीं रहा?' बेटा! कीलें तो सब निकल गयी पर कीलों के न मिटने वाले दाग दीवार पर रह गये हैं, जो तुम्हारे बुरे कर्मों को हमेशा याद दिलाते रहेंगे, तुम्हें और अच्छे कर्मों की प्रेरणा देते रहेंगे।

7. **माँ ही सच्ची तीर्थ**–पार्वती जी के दो पुत्र थे–गणेश और कार्तिकेय। पार्वती को प्रसाद रूप में एक लड्डू प्राप्त हुआ। दोनों बच्चे वह लड्डू खानें के लिए मचलने लगे। लड्डू एक था, खाने वाले दो। पार्वती उनके दो टुकड़ करना नहीं चाहती थीं। उन्होंने बच्चों से कहा, 'यह लड्डू मैं उसको दूँगी, जो अपने को दूसरे से अधिक धर्मात्मा सिद्ध करेगा।' इतना कहना था कि कार्तिकेय तीर्थ–यात्रा पर निकल पड़े। सोचा, तीर्थों की यात्रा से उन्हें जो लाभ होगा, वह उनको भाई से अधिक धर्मात्मा सिद्ध कर देगा। उन्होंने बड़े–बड़े तीर्थों की यात्रा कर डाली। गणेश ने सोचा, सबसे बड़ा धर्मात्मा वह है जो अपने माता–पिता की सेवा करता है। उन्होंने प्रेम और आदर से माता–पिता की परिक्रमा की औरप्रणाम करके उनके चरणों में बैठ गये। थोड़ी देर में कार्तिकेय लौटे तो दोनों ने लड्डू मांगा। दोनों कुमारों को सामने बिठाकर माता–पिता ने कहा, 'तीर्थों की यात्रा से, देवी–देवताओं की अर्चना से और व्रतों से बढ़कर माता–पिता की पूजा होती है।' मोदक गणेश को मिल गया।

8. **कन्फ्यूशस** ने चीन में स्थित अपने राज्य में यह नियम बनवा दिया था कि जो बुढ़ापे में अपने माता–पिता की सेवा नहीं करता, उसे प्राण–दण्ड दिया जाए। इससे पता चलता है कि कन्फ्यूशस, माता–पिता की सेवा को कितना महत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि समझता था।

▪

Arya Public School

Near 100 Ft. Road, Sec.-55, Jeevan Nagar, Faridabad

The School : Neat & Clean Campus, Educated and dedicated Promotors, Transport Facility from nearby areas, Permanently recognised and affliated to Haryana Board, Special emphasis on Spoken English, Ultra modern teaching aids, including projectors, Library with all relevant material.

Director
Sanjay Arya
9212307856

Principal
Rajni Arya
9212307852

thearyasamaj.org

अनूठे आदर्श

- मुरारी लाल शर्मा

सुख-दुःख जो कुछ आ पड़े, सब धैर्यपूर्वक तुम सहो।
होगी सफलता क्यों नहीं, कर्तव्य-पथ पर दृढ़ रहो।
- मैथिलीशरण गुप्त

जूलियस सीजर की मृत्यु के पश्चात् कुछ दिनों तक रोम में बड़ा भारी उपद्रव मचा। इस हुड़दंग के समय में सिसरो के भाई कुइनटस को मृत्यु-दण्ड दिया गया। कुइनटस अपने घर के एक गुप्त स्थान में जा छिपा।

सिपाहियों को जब कुइनटस का पता न चला तो उन्होंने क्रोध से आगबबूला होकर कुइनटस के पुत्र को पकड़ लिया। पिता का पता पूछने के अभिप्राय से सिपाही, कुइनटस के पुत्र को कठोर-से-कठोर यन्त्रणाएँ देने लगे। इस बालक ने ये सब घोर यन्त्रणाएँ सह लीं, परन्तु अपने मुख से एक भी शब्द न निकाला।

पिता को व्यथित पुत्र की एक आहभरी चीख सुनाई पड़ गई और वह अपने प्राणप्यारे पुत्र की इस हृदयविदारक दुर्दशा को सहन न कर सका। कुइनटस तुरन्त ही गुप्तस्थान से निकल आया और आँखों में आँसू भरके, हाथ जोड़कर सिपाहियों से प्रार्थना की, "परमात्मा के लिए इस निरपराध बालक को छोड़ दीजिए!"

परन्तु इन क्रूर निर्दयी हिंसकों के सन्मुख तो दया जैसी पवित्र वस्तु का नाम लेना भी महापाप था। वे अत्याचारी पिता की करुणाजनक प्रार्थना और पुत्र के कष्टों की खिल्ली उड़ाने लगे और बोले, "तुम्हारे लिए कम-से-कम दण्ड मृत्यु-दण्ड ही है!"

लाचार, आपत्ति के मारे पिता और पुत्र ने धैर्य और संतोष के साथ सब कुछ स्वीकार कर लिया। परन्तु, पहले किसे प्राण-त्याग करना चाहिए-इस पर वाद-विवाद होने लगा। इसका कारण यह था कि दोनों में से हर एक पहले मरने का इच्छुक था। क्रूर जल्लादों ने कहा, "झगड़ा करने की क्या आवश्यकता है?" यह कहते ही एक-साथ पिता-पुत्र दोनों का काम तमाम कर दिया।

संसार के इतिहास में पितृ-भक्ति और पुत्र-प्रेम के ऐसे अनूठे आदर्श बहुत ही कम देखने में आए हैं। पिता और पुत्र का ऐसा सम्बन्ध सर्वथा अनुकरणीय है।

■

अहिंसा

स्वामी विवेकानन्द

- अहिंसा का आरंभ मन से करें। अच्छा सोचें। फिर वाणी से सत्य, मधुर और सीमित बोलें। अनिष्ट चिंतन, कठोर और स्वार्थपूर्ण वाणी से बचें।
- आपकी दुःखद स्थिति भले ही किसी को हँसी-सुख दे जाए। परन्तु आपकी हँसी किसी को दुःख न दे, इस बात का पूरा ध्यान रखें।
- अपने वचन हमेशा मीठे ही बोलें क्योंकि यदि कभी हमें अपने वचन वापस भी लेने पड़ें, तो तब हमें कष्ट अनुभव न हो।
- मीठा बोलें। संसार में पहले ही कर्कशता बहुत है।
- किसी भी व्यक्ति का मजाक न उड़ाएं।
- जीभ यदि तोतली होगी, तो शायद चल जाएगी। यदि तोड़ती होगी, तो नहीं चलेगी। जीभ को तोड़ने वाली नहीं, जोड़ने वाली बनाएं।
- यदि कोई आपके ऊपर झूठे आरोप लगाता ही जाए, तो उसे सावधान करें। लोगों में फैलने वाली भ्रांति का स्पष्टीकरण अवश्य करें, लेकिन झगड़ें नहीं।
- क्षत्रिय अन्याय को सहन करता है तो ये अधर्म है, लेकिन ब्राह्मण के लिए धर्म है। अगर क्षत्रिय अन्याय को सहन करना शुरु कर दे, तो अहिंसा की रक्षा नहीं हो सकेगी। चारों ओर हिंसा-अन्याय बढ़ जायेगा।

thearyasamaj.org

स्टेटस सिंबल

– प्रो. शामलाल कौशल

संगरूर से कानपुर रमेश अपने पुराने मित्र सुरेश को मिलने गया। वह कानपुर में किसी प्राईवेट कम्पनी में ऊँचे पद पर नियुक्त था। सुरेश उसे स्टेशन से अपनी चमचमाती गाड़ी में बैठाकर घर ले गया। घर पहुँचकर उसने अपने मित्र का परिचय अपनी पत्नी रीटा और बच्चों से कराया। दोनों मित्र पुराने समय की बातें करते-करते चाय की चुस्कियों का आनन्द ले रहे थे।

बातों बातों में रमेश ने सुरेश से पूछ ही लिया, "तेरे मम्मी पापा दिखाई नहीं दे रहे?" सुरेश ने कहा, "यार, अब तेरे से क्या छिपाना। तेरी भाभी और बच्चों को मेरी मम्मी और पापा के मेरे साथ रहने से काफी दिक्कत होती थी। इसलिए मैंने उन्हें वृद्ध आश्रम में दाखिल करा दिया है और अब सब ठीक हो गया है।"

इसके बाद बात बदलते हुए सुरेश ने रमेश पर रौब डालते हुए कहा, "तेरी भाभी को मैंने सोने और डायमंड की ज्वैलरी ले दी है। उसकी अपनी ही गाड़ी है। वह किट्टी पार्टियों में जाती है। मैं भी मौका मिलने पर क्लब जाता रहता हूँ। मेरे पास 3 आयातित गाड़ियाँ हैं। मैं समय-समय पर हिल स्टेशन जाता रहता हूँ। यह सब चीजें आजकल स्टेटस सिंबल बनी हुई हैं। इनसे समाज में मेरी बहुत अच्छी पोज़ीशन है।"

बीच में रमेश ने टोकते हुए कह ही दिया, "शायद बूढ़े माँ-बाप को अपने पास न रख कर उनसे पीछा छुड़वाना भी एक स्टेटस सिंबल होगा?"......

यह सुनकर सुरेश के चेहरे का रंग उड़ गया।

अतीत और वर्तमान

– शान्ति नन्दन विशारद

जननी हमारी है वही, श्री राम जिस के लाल थे।
हम हैं पले उस गोद में, जिस में पले गोपाल थे।।
वह दूध हमने भी पिया है, भीष्म ने जो था पिया।
है भीष्म की लीला स्थली में खेल हमने भी किया।।
जिस ने उठाया कर्ण को, ऊपर रहा वह हाथ है।
जिस ने बढ़ाया पार्थ को, वह मन्त्र अपने साथ है।।
हम धीर वीर प्रताप के, बन वन फिरें हैं घूमते।
हम श्री शिवा के गिरि गढ़ों पर भी चढ़े हैं झूमते।।
हैं वीर भूषण की सुनी नित वीर-वाणी चाव से।
है गान आल्हा का किया, नित गर्व मिश्रित भाव से।।
उपवास व्रत सब ही किए हैं, बुध ने जो थे किये।
वे गेरुआ कपड़े लिये, जो थे दयानन्द ने लिये।।
हम निज जननी के आज भी प्रिय रत्न है प्रियलाल हैं।
निज पूर्वजों की आश है, दुख दानवों के काल हैं।।
सब कुछ सही, सब कुछ सही, पर एक इतनी बात है।
हम हैं वही हम या नहीं बस यह न हम को ज्ञात है।।

विचार टेलीविजन

जैसे कि पाठकों को सुविदित होगा 'विचार' द्वारा निर्मित कार्यक्रमों का दैनिक प्रसारण सुप्रसिद्ध आस्था चैनल पर रात्रि 9.30 से 10.00 बजे तक हो रहा है एवम् इसका पुनः प्रसारण आस्था भजन चैनल पर सायं 8.00 से 8.30 बजे तक चल रहा है। हमारा आपसे विनम्र निवेदन है कि आपकी सुप्रसिद्ध पत्रिका के माध्यम से आर्य जगत् को वैदिक कार्यक्रमों के प्रसारण की जानकारी प्राप्त हो।

आपके जानकारी हेतु, विचार का केन्द्रीय कार्यालय अंधेरी (मुम्बई) से सुरत (गुजरात) में स्थानांतरित हुआ है। अतः आप विचार से पत्र व्यवहार व अन्य जानकारी प्राप्त करने हेतु कृपया निम्नलिखित पते पर संपर्क करें।

विचार टेलीविजन नेटवर्क लिमिटेड
प्रथम तल, बिंदल हाउस, कुंभारीया,
सूरत-कडोदरा मार्ग, सूरत-394210
गुजरात (भारत)
दूरभाष : +91 0261 2644406 / 407
चलभाष : + 91 75748 24406
वेबसाईट : www.vichaar.tv
E-mail : info@vichaar.tv

thearyasamaj.org

प्राकृतिक चिकित्सा के नियम

- आचार्य शेषाद्रि स्वामिनाथन

हमारा जीवन वैसा बनता है जैसा हम उसे बनाते हैं यह जीवन का अटल सत्य है। हमारी इस समय की दशा उस जीवन पद्धति का परिणाम है जिसे हमने बीते समय में अपनाया था और भविष्य में हम वैसे बनेंगे जैसा हम इस समय जीवन बिता रहे हैं। इस सत्य में जहाँ हमारे लिए संभाव्य खतरे की चेतावनी निहित है वहाँ इसमें आशा की झलक भी विद्यमान है।

स्वास्थ्य खरीदा नहीं जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति की दैनिक जीवन-पद्धति स्वास्थ्य-घातक हो तो वह कभी दवाइयों के जरिए स्वस्थ नहीं हो सकता।

आधुनिक जगत में अधिकतर लोग रोगी हैं क्योकि उनके खान-पान, रहन-सहन इत्यादि शरीर की स्थिति को बिगाड़ देते हैं और रोगी साधारणतः अपनी आदतों को सुधारते नहीं परन्तु विषैली दवाइयों का सेवन करते जाते हैं इसके कारण से दिन प्रतिदिन नए-नए रोग बढ़ रहे हैं जो ला-इलाज भी समझे जाते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली में रोगों के इलाज के लिए दवाइयों का कोई स्थान नहीं क्योंकि हमारे मतानुसार रोग का अपना कोई अस्तित्व ही नहीं। हम तो रोगी का इलाज करते हैं रोग का नहीं।

रोगी की चिकित्सा करने में भी प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली की विशेषता है। इसमें रोगी के स्वास्थ्य स्तर को दिन प्रतिदिन प्राकृतिक नियमों के अनुसार बढ़ाते जाते हैं और जैसे-जैसे स्वास्थ्य का स्तर बढ़ता जाता है वैसे ही रोगी को आराम होता है और रोग के लक्षण तथा उनसे उत्पन्न परेशानियाँ खत्म होती जाती है।

प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली अति सरल है। यह एक घरेलू चिकितसा पद्धति है। इसको अपनाने से अर्थात् प्राकृतिक नियमों के अनुसार रहने से तथा बुरी आदतों से मुक्त रहने से रोगी स्वस्थ बनते हैं और उनके पश्चात् स्वास्थ्य उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है।

भोजन :-

भोजन से पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए इन नियमों का ख्याल रखिए :

- भूख लगने पर ही खाऐं। बिना भूख के खाने से कई प्रकार के रोग होते हैं।
- दिन में दो ही बार खायें। एक भोजन और दूसरे के बीच में कम से कम सात-आठ घंटे का अन्तर होना चाहिए।
- मानिसिक स्थिति शांत न होने पर न खाऐं तथा शरीर बहुत थका हुआ हो या किसी प्रकार के तीव्र रोग से पीड़ित हो, तो भी न खाऐं।
- भोजन लेने के बाद कम से कम एक-दो घंटे के लिए आराम करना जरूरी है। यदि ऐसा नहीं हो सकता है तो कम मात्रा में भोजन करें।
- भोजन को चबा-चबा कर खाऐं ऐसा करने से ही उसका पाचन अच्छी तरह हो जाता है।
- मांस, मछली, अंडे इत्यादि अम्लकारक हैं। इनके उपयोग से शरीर को नुकसान होगा। इसलिए इन पदार्थों को छोड़ देना चाहिए।
- ऐसे ही सब प्रकार के बनावटी पदार्थ-जैसे मैदा, सफेद चीनी, इससे बनी मिठाइयाँ, टिनों, बोटलों और पैकटों में बंद जो कारखानों में बनाये जाते हैं-ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।
- खाद्य पदार्थ प्राकृतिक रूप में ही लिए जायें जहाँ तक हो सके उसकी पूर्णता को न बिगाड़ें।
- सब्जियों में कई ऐसी हैं जो कच्ची, अनपके रूप में ही खाई जा सकती हैं। इनको ऐसे ही उपयोग करें। यथासम्भव छिलके समेत ही खाऐं क्योंकि इनके छिलकों में तथा उनके बिल्कुल नीचे ही कई तरह के स्वास्थ्य-वर्धक तत्व (विटामिन, खाद्य-लक्षण इत्यादि) होते हैं। कच्ची सब्जियों में इन्जाइम होते हैं जो पाचन क्रिया में अत्यन्त उपयोगी हैं। इन सब्जियों को छिलके समेत पहले धो डालें फिर उनको काटें। इनमें नमक मिर्च मसाले इत्यादि को न मिलाऐं।

thearyasamaj.org

- नमक, मिर्च मसाले इत्यादि के उपयोग से विशेष रूप से पाचक अंगों में उत्तेजना होती रहती है। आगे इन अंगों में सूजन होकर कई प्रकार के रोग हो जाते हैं इसलिए नमक, मिर्च मसाले को यदि छोड़ न सकें तो कम से कम, न के बराबर उपयोग करें।
- जो सब्जियाँ कच्ची नहीं खायी जा सकती हैं, उनको भाप में पकाकर खायें। सब्जियों को तलने से या अधिक समय तक पानी में उबालने से, उनके कई तत्व नष्ट हो जाते हैं।
- फलों को भोजन के साथ या उनके बिल्कुल बाद कभी न लें। फलों को खाली मेदे में लेना अत्यन्त लाभदायक है। एक वक्त में एक ही तरह के फल लें, उसको भी यथा सम्भव छिलके समेत ही खाऐं और चबा–चबा कर लें। फल लेने के तीन घंटे बाद ही कुछ और भोजन लिया जा सकता है।
- मिलों में तैयार किये गये आटा, चावल आदि तथा छिलका निकली हुई दालें स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्जित हैं। घर की चक्कियों में पीसा, चोकर सहित आटा, हाथ–कुटा चावल, छिलके समेत दाल इत्यादि परिमित मात्रा में लिया जा सकता है।

आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा आयोजित आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर 26 अक्टूबर से 2 नवंबर 2014 तक आर्य समाज सान्ताक्रूज के प्रांगण में आवासीय शिविर रखा गया।

शिविर का प्रारम्भ श्रीमति अरुणा परेश पटेल, श्रीमती रजनी रवि सिंग एवं श्री लालचन्द आर्य उप प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रूज के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ।

शिविर में शारीरिक पाठ्यक्रम का संचालन द्रोणस्थली तपोवन देहरादून से आई सुव्रती आर्या, श्रीमती वीणा चतुर्वेदी पाणिनी कन्या गुरुकुल वाराणसी एवं अंजलि गोस्वामी एवं सौरभ सिंह मुम्बई ने किया। आर्य समाज सान्ताक्रूज के महामन्त्री श्री संगीत शर्मा जो इस शिविर के शिविराध्यक्ष के सफल निर्देशन में मुम्बई आर्य वीर दल के संचालक पं. नरेन्द्र शास्त्री तथा मन्त्री पं. धर्मधर आर्य के नेतृत्व एवं श्री सतीश गोस्वामी व ज्ञानप्रकाश आर्य के अथक पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ। श्रीमती जयाबेन पटेल संचालिका– आर्य वीर दल मुम्बई, संयोजिका श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री, सरोज गुप्ता एवं सुनीता शास्त्री के सहयोग से महिलाओं की पूरी टीम ने शिविर में समस्त भोजनादि की व्यवस्था को सुचारू रूप से पूर्ण किया। आर्य वीर दल के बौद्धिकाध्यक्ष ब्र. अरुण कुमार "आर्यवीर" ने शिविर में बौद्धिक प्रशिक्षक के रूप में सेवाएं दीं।

प्रातः 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक चलनेवाली व्यस्त दिनचर्या में इन वीरांगनाओं को आसन–प्राणायाम, कूंग–फू, कराटे, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार आदि के व्यायाम तथा विभिन्न खेल खिलाए गये। ईश्वर–जीव–प्रकृति, वेद, सृष्टि रचना, पंचमहायज्ञ, 16 संस्कार, वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्थ्ज्ञा की जानकारी सरल ढंग से दी। बौद्धिक कक्षाओं में स्थानीय विद्वानों डा. निकेश, श्रीमती निर्मला पारधी, श्री योगेश शास्त्री, श्री सन्दीप आर्य, श्रीमती रमा आर्या, श्रीमती प्रिया कटारिया एवं डॉ. तारा सिंह ने चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, तनाव मुक्ति, योग व व्यवहारिक जीवन में सफलता स्वस्थता आदि विषयों पर भी प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती अल्का केरकर उपमहापौर ने इस प्रकार के शिविर प्रतिवर्ष करने का आग्रह किया, जिससे नवयुवक–युवतियों को वैदिक संस्कृति–सभ्यता से अवगत कराया जा सके।

– पं. धर्मधर आर्य, महामन्त्री, आर्य वीर दल मुम्बई

HR/FBD/67/2013-2015 dt. 1.1.13
Reg. No. : 42323/84

सेवायाम्
श्रीमान्/श्रीमती

आर्य समाज, सैक्टर 7,
फरीदाबाद-121 006

उजली व चमकदार धुलाई

हाथ सुरक्षित

वनस्पति अखाद्य तेलों से निर्मित

निर्माता : **पुनीत उद्योग**

37- E, सैक्टर 6, फरीदाबाद-121006

दूरभाष : 0129-2241467, 4061389

ट्रेड मार्क मालिक :-

उत्तम कैमीकल उद्योग

प्लाट नं. 309, सैक्टर-24, फरीदाबाद पिन - 121006

आर्य वीर विजय, मनोहर लाल द्वारा आर्य वीर दल हरियाणा के लिए 'तप मिनी ऑफसैट प्रिंटर्स', 279 सेक्टर 7 मार्किट, फरीदाबाद से छपवाकर, आर्यसमाज मन्दिर, सैक्टर 7, फरीदाबाद-121006 से प्रेषित।